Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا (सूरत अन्निसा आयत :30)

अनुवाद: हे वे लोगो जो ईमान लाए हो अपने माल नाजायज़ तरीक़ा से न खाया करो। हां यदि वह ऐसा व्यापार हो जो आपसी सहमति से हो और तुम अपने आप को कत्ल न करो। नि:सन्देह अल्लाह तुम पर बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 5

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक- 43

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

4 रबीयुल अव्वल 1441 हिज्री कमरी 22 इख़ा 1399 हिज्री शम्सी 22 अक्तूबर 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

"रिज़्क इब्तिला" के तौर पर तो वह रिज़्क है जिस को अल्लाह से कोई सम्बन्ध नहीं रहता। बल्कि यह रिज़्क इन्सान को ख़ुदा से दूर करता रहता है। यहां तक कि उइसको हलाक कर देता है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

रमज़ान की वास्तविकता

रम्ज़ सूरज की तपिश को कहते हैं। रमज़ान में चूँकि इन्सान खाना पीना और समस्त शारीरिक लज़्ज़तों पर धैर्य करता है। दूसरे अल्लाह तआला के आदेशों के लिए एक गर्मी और जोश पैदा करता है। रुहानी और जस्मानी गर्मी और तपिश मिलकर रमज़ान हुआ। शब्दकोष वाले जो कहते हैं कि गर्मी के महीने में आया, इस लिए रमज़ान कहलाया। मेरे निकट यह सही नहीं है। क्योंकि अरब के लिए यह विशेषता नहीं हो सकती। रुहानी रम्ज़ से अभि-प्राय रुहानी ज़ौक़ तथा शोक और धर्म की गर्मी होती है। रम्ज़ उस गर्मी को भी कहते हैं जिस से पत्थर इत्यादि गर्म हो जाते हैं। (अल्हकम जिल्द 5 नम्बर 27 दिनांक 24 जुलाई 1901 ई पृष्ठ 1,2)

29 जनवरी 1898 ई रुहानी ताक़तों पर उपास्य का प्रभाव

इन्सान की रुहानी ताक़तों पर उसके उपास्य का बड़ा प्रभाव पड़ता है। देखो ! अगर कोई ... आ जाए तो दूर ही से उससे ग़फ़लत की बू आती है। क्यों? इसलिए कि उनका अपना बनाया हुआ उपास्य भी तो ऐसा ही अज्ञान है कि जब तक एक अंग्रेज़ के खाने की घंटी की तरह घंटी न बजे वह बेदार ही नहीं होता। यही कारण है कि रुहानी ज़िन्दगी से जो मार्फ़त और शिफ़ा प्राप्त होती है, इससे ये लोग वंचित रहते हैं; वर्ना जिस्मानी तौर पर तो बड़े खाते पीते और अच्छी हालत वाले होते हैं।

रिज़्क इब्तिला और रिज़्क इस्तिफ़ा

मूल बात यह है कि रिज़्क दो प्रकार के होते हैं। एक इब्तिला के तौर पर, दूसरे इस्तिफ़ा के तौर पर। रिज़्क इब्तिला के तौर पर तो वह रिज़्क़ है जिस को अल्लाह से कोई सम्बन्ध नहीं रहता। बल्कि यह रिज़्क़ इन्सान को ख़ुदा से दूर डालता जाता है। यहां तक कि उसको हलाक कर देता है। इसी तरफ़ अल्लाह तआला ने इशारा कर के फ़रमाया है। لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ (अल-मुनाफ़ेक़ून:10) तुम्हारे माल तुमको हलाक न कर दें और रिज़्क़ इस्तिफ़ा के तौर पर वह होता है जो ख़ुदा के लिए हो। ऐसे लोगों का निगरान ख़ुदा हो जाता है और जो कुछ उनके पास होता है वह उसको ख़ुदा ही का समझते हैं और अपने अनुकरण से साबित कर के दिखाते हैं। सहाबा रज़ि की हालत को देखो! जब परीक्षा का वक़्त आया तो जो भी किसी के पास था अल्लाह तआला की राह में दे दिया। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि सब से पहले कम्बल पहन कर आ गए। फिर उस कम्बल का बदला भी अल्लाह तआला ने क्या दिया कि सबसे अव्वल ख़लीफ़ा वही हुए। अत: यह है कि असली ख़ूबी, ख़ैर और रुहानी लज़्ज़त से लाभान्वित होने के लिए वही माल काम आ सकता है जो ख़ुदा की राह में ख़र्च किया जाए।

(अल्हक़म जिल्द 3 नम्बर 22 दिनांक 23 जून 1899 ई पृष्ठ 1)

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 194 से 195 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

सलाम से पहले सिज्दा सहू सिज्दा में कुहनी ज़मीन पर न लगाए

(807)हज़रत अब्दुल्लाह बिन मालिक बिन बहीना से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब नमाज़ पढ़ते तो आप दोनों हाथ (पहलू) से अलग रखते। यहां तक कि आप की बग़लों की सफ़ेदी दिखाई देती।

(822)हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाह अन्हो से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया सिज्दा में मध्य मार्ग से काम लो और तुम में से कोई अपनी बाहें इस तरह न बिछाए जिस तरह कुत्ता बिछाता है।

(829)हज़रत अब्दुल्लाह बिन बहीना से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें ज़ुहर की नमाज़ पढ़ाई और आप पहली दो रकअतों में खड़े हो गए, बैठे नहीं और लोग भी आप के साथ खड़े हो गए जब आप नमाज़ पढ़ चुके और लोग प्रतीक्षा करते थे कि आप सलाम फेरेंगे तो आप ने उसी हालत में कि आप बैठे हुए थे , अल्लाहो अक़बर कहा और सलाम से पहले दो सिज्दे किए। फिर आप ने सलाम फेरा।

(सही बुख़ारी, भाग 2 किताबुल अज़ान, प्र-काशन कादियान 2006 ई)

सारी क़ौम का स्वभाव बन जाए कि जब कोई व्यक्ति फौत हो तो यह प्रश्न न हो कि कौन इसके बच्चों की परवरिश करेगा।

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब खलीफतुल मसीह सानी फरमाते हैं कि

"अनाथों की देखभाल और विधवाओं से उत्तम व्यवहार ये दो ऐसी चीज़ें हैं जो क़ौम में साहस और बहादुरी पैदा कर देती हैं। अगर ये चीज़ क़ौम में मौजूद न हो बल्कि उसके विपरीत उसके लोगों का उदाहरण हो कि वे अनाथ तो रखते हों परन्तु नौकर बना कर बल्कि नौकरों से भी बुरी हालत में और वह ज़रा ज़रा सी बात पर उनको थप्पड़ मारने के लिए तैयार हो जाते हों तो कौन व्यक्ति है जिसका मरने को दिल चाहेगा। हर व्यक्ति डरेगा हर व्यक्ति मौत से घबराएगा और समझेगा कि मेरी मौत मेरे बच्चों की मौत है। मेरी मौत मेरी बीवी की मौत है मैं मरूँ तो किस तरह और जान दूं तो क्यों। अत: ज़रूरी है कि सारी क़ौम का यह स्वभाव बन जाए कि जब कोई व्यक्ति फ़ौत हो तो यह सवाल न हो कि कौन उसके बच्चों की परवरिश करेगा। बल्कि लोग ख़ुद दौड़ते हुए जाएं और उन बच्चों को अपने सीना से लगाते हुए अपने घरों में ले आएं और अपने बच्चों की तरह बल्कि अपने बच्चों से भी बढ़कर उनसे मुहब्बत और प्यार और नर्मी और स्नेह का सुलूक करें।

रसूल करीम सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम के ज़माना की घटना है एक बच्चा अनाथ रह गया तो कुछ सहाबा रज़ि में आपस

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

2019-2020 ई में जमाअत अहमदिया पर नाज़िल होने वाले अल्लाह तआला के असंख्य फ़ज़्लों और समर्थनों तथा सहायता के महान निशानों में से कुछ का ईमान बढ़ाने के लिए वर्णन।(भाग....2)

इस वर्ष 2 नए रेडियो स्टेशनों की वृद्धि।

एम टी ए इंटरनैशनल के 24 घंटे के प्रसारण के इलावा 84 देशों में टीवी और रेडियो चैनलों पर 11 हज़ार 63 टीवी प्रोग्रामों के द्वारा 6 हज़ार 842 घंटे जबकि रेडियो पर18 हज़ार 489 घंटे पर आधारित 22 हज़ार 167 प्रोग्राम प्रसारित हुए

एक अनुमान के अनुसार टीवी और रेडियो के द्वारा 52 करोड़ लोगों तक अहमदियत अर्थात वास्तविक इस्लाम के पैग़ाम का प्रकाशन।

इस साल 80 देशों में कुल एक लाख 18 हज़ार नौमुबाईन से सम्पर्क स्थापित किया, 3 हज़ार 891 जमाअतों में 16 हज़ार 823 नौमुबाईन की तर्बीयती क्लासिज़ का आयोजन, एक लाख से अधिक नौमुबाईन की इन क्लासिज़ में शिरकत,124 इमामों की ट्रेनिंग।

जलसा सालाना यू.के से सम्बन्धित सय्यदना अमीरुल मोमनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रिहिल अज़ीज़ का विशेष ख़िताब।

9 अगस्त 2020 ई अर्थात 9 ज़हूर1399 हिज्री शम्सी स्थान इवाने मसरूर,इस्लामाबाद,टलफ़ोरड (सिरे)यू के

इस वर्ष दिसम्बर 2019 ई में कांगो किंशासा के रेडियो इस्लामिक अहमदिया के नाम से पहला अहमदिया रेडियो स्टेशन की स्थापना करने की तौफ़ीक़ मिली। वहां के "मतादी" क्षेत्रों के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि रेडियो अहमदिया कोंगो के उद्घाटन के अवसर पर क्षेत्र के लोकल चर्च के बड़े पादरी इसहाक़ साहिब भी शामिल हुए। वहां पर इस्लाम अहमदियत की वास्तविक शिक्षाओं को सुनकर कहने लगे कि मैंने तो इस क़स्बा के मुसलमानों से पिछले कई दहाईयों से यही सीखा है कि इस्लाम जादू, तावीज़ गंडे और अमलीयात इत्यादि का नाम है जिस के कारण से कभी इस्लाम की तरफ़ मेरा ध्यान पैदा नहीं हुआ परन्तु यहां जो भाईचारे और हमदर्दी और प्यार मुहब्बत और एहसास की इस्लामी शिक्षा वर्णन की जा रही है उसने मेरी पिछली ज़िन्दगी की धारणा को एकदम बदल दिया है और मुझे ख़ुशी है कि अब अहमदिया रेडियो के द्वारा हमें इस्लाम के बारे में और अधिक जानने की तौफ़ीक़ मिलेगी।

बोरकीना फासो के "बानफ़ूरा" क्षेत्र के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि शहर के लोकल रेडियो पर जमाअत के प्रोग्राम प्रसारित किए जाते हैं। उनमें लाईव प्रोग्राम भी शामिल हैं। एक दिन एक व्यक्ति ने फ़ोन पर बताया कि मैं बानफ़ूरा शहर का रिहायशी हूँ और मैं नियमित जमाअत की तब्लीग़ सुनता हूँ और यह बात मुझ पर स्पष्ट हो चुकी है कि अहमदियत ही वास्तविक इस्लाम है इसलिए मैं आपसे मिलना चाहता हूँ और अहमदियत में दाख़िल होना चाहता हूँ क्योंकि उस वक़्त जमाअत के इलावा किसी भी जगह इस्लाम की सही शिक्षा नज़र नहीं आती और हर एक के आपस में मतभेद बहुत अधिक हैं जिनसे हम कभी निकल नहीं सकते इसलिए आज वास्तविक अमन सिर्फ़ अहमदियत में है।

फिर कोंगो किंशासा में एक जगह के मुअल्लिम हैं वह लिखते हैं कि अहमदिया रेडियो की सिक्योरिटी के काम करने वाले एक दिन जमाअत की किताब The True Story of Jesus पढ़ रहे थे। इस दौरन रीफार्म चर्च के पादरी का वहां से गुज़र हुआ और उनकी किताब पर नज़र पड़ी तो पूछा कि यह क्या पढ़ रहे हो। ईसा साहिब ने किताब दिखाई। इसका टाइटल देखकर ही पादरी को दिलचस्पी पैदा हुई। उन्होंने किताब पढ़ने के लिए मांग ली। अगले दिन रेडियो में तशरीफ़ लाए और इस्लाम में ईसा अलैहिस्सलाम की ज़िन्दगी पर काफ़ी सवाल किए। जब उन्हें उनके सवालों के तसल्ली बख़्श जवाब दिए गए तो बड़े दर्द के साथ कहने लगे कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का असल तो यही मुक़ाम है और यही असल घटनाएं हैं जो लोगों की नज़र से ओझल हैं। मैं जिस जगह पर हूँ वहां से छोड़ना मेरे लिए बहुत मुश्किल है। अब अगर हिम्मत होती तो फ़ौरन जमाअत में दाख़िल होकर तब्लीग़ का काम शुरू करता परन्तु मजबूरियाँ हैं और फिर कहने लगा कि दुआ करें कि अल्लाह मुझे वह ईमान की शक्ति प्रदान करे कि मैं दुनिया से लड़ कर वास्तविक पैग़ाम स्वीकार करने वाला बन जाऊं।

फिर अन्य टीवी प्रोग्राम हैं। एम टी ए इंटरनेशनल की 24 घंटे के प्रसारण के इलावा 84 देशों में टीवी और रेडियो चैनलों पर जमाअत को इस्लाम का पुरअमन पैग़ाम पहुंचाने की तौफ़ीक़ मिली। इस साल 11 हज़ार 63 टीवी प्रोग्रामों के द्वारा 6 हज़ार 842 घंटे वक़्त मिला और रेडियो स्टेशनों के इलावा विभिन्न देशों में रेडियो स्टेशनों पर 18 हज़ार 479 घंटे पर आधारित 22 हज़ार 167 प्रोग्राम प्रसारित हुए और टीवी और रेडियो के द्वारा से उनका अंदाज़ा है कि क़रीबन 52 करोड़ लोगों तक पैग़ाम पहुंचा।

अमीर साहिब सेनेगाल लिखते हैं कि अम्बूर शहर में लोकल टीवी स्टेशन पर जो कि यू टयूब पर भी प्रसारित होता है वहां मेरा ख़ुत्बा सुनाया जाता है। यहां लंदन से जो एम टी ए पर प्रसारित होता है वह लेकर सुनाते हैं। इसके द्वारा एक व्यापारी फ़ैमली अहमदियत में दाख़िल हो चुकी है और इस टीवी स्टेशन के मालिक जलसा सालाना जर्मनी में भी आए थे और मुझे मिले भी थे।

इंटरनेशनल एसोसीएशन आफ़ अहमदिया आर्किटेक्टस ऐंड इंजीनियर्ज़: यह भी विभिन्न प्राजेक्टों पर काम कर रहे हैं। एक वाटर फ़ार लाईफ़ है दूसरा सोलर सिस्टम है तीसरा अफ़्रीक़ा के ग़रीब देशों में मॉडल विलेजज़ हैं। चौथा तामीराती प्राजेक्टस हैं। सब कामों को अंजाम देने के लिए यूके, जर्मनी, स्विटज़रलैंड, हॉलैंड, घाना, नाईजीरिया, पाकिस्तान और अन्य देशों से इंजीनियर्ज़ और आर्किटेक्टस, इलेक्ट्रीशनज़, पलम्ब्बरज़ और दूसरे विभिन्न विभागों के माहरीन अपनी सेवाएं पेश करते हैं। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से यह दुनिया में बड़ा अच्छा काम कर रहे हैं। अब तक इनके द्वारा कुल 2 हज़ार 8 सौ से अधिक गांव में पानी के नलके लग चुके हैं और उनके द्वारा 2 लाख 50 हज़ार से अधिक लोग इस से लाभान्वित हो रहे हैं। मॉडल विलेजज़ का जहां तक सम्बन्ध है अब तक 9 देशों में इन मॉडल विलेजज़ की कुल संख्या 19 हो गई है।

कांगड़ा इंडिया के मुअल्लिम साहिब वक़्फ़ जदीद लिखते हैं कि उनको वहां पानी की ज़रूरत थी तो बोर करने वाले मशीन ऑप्रेटर ने आते ही कहा कि मैं चार मस्जिदों में गया हूँ और वहां दो दो बोर भी करके देख लिए हैं लेकिन कामयाबी नहीं मिली इसलिए आप देख लें। मैं कुछ नहीं कह सकता पानी निकले या न निकले। बहरहाल उनको यह कहा गया आप उचित जगह देख के अल्लाह का नाम लेकर बोर शुरू करें। जमाअत को कहा दुआ भी करो। सदक़ा भी दिया गया और तीस फिट पर पानी के निशान नज़र आना शुरू हुए और फिर कहते हैं कि सवा तीन सौ फुट पर बोर छोड़ दिया गया और बड़ा अच्छा पानी निकल आया और मशीन का ऑप्रेटर यह कहने लगा कि आप लोगों के तरीक़े को देखकर मान गया हूँ कि जिस तरह आप लोगों ने दुआ और सदक़े से इस जगह पानी निकाला है यह बोर पथरीली ज़मीन पर हुआ था और काफ़ी मुश्किल भी था लेकिन अल्लाह के फ़ज़्ल से पानी भी निकल आया और मीठा पानी निकला और पूरा गांव अब इस पानी को प्रयोग कर रहा है।

मुबल्लिग़ इंचार्ज गिनी कनाकरी लिखते हैं कि मैं (एक दूर दराज़ गांव) गया तो मुझे एक औरत ने कहा में एक जगह दिखाना चाहती हूँ। वहां देखा तो क़तरा-क़तरा पानी टपक रहा था जो क़रीब के पहाड़ से आ रहा था। उसने बताया कि सारा गांव लंबे अर्से से यहां से अपनी पानी की ज़रूरतें पूरी कर रहा है और कहते हैं मेरे पूछने पर पता चला कि हुकूमत कई बार यहां कोशिश कर चुकी है लेकिन पानी नहीं निकलता था। बहरहाल उन्होंने कहा हम कोशिश करते हैं अल्लाह तआला फ़ज़्ल फ़रमाएगा। एक कुँआं खोदने वाली कंपनी से बात की। उन्हें वहां भिजवा दिया और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से दो हफ़्तों के बाद वहां पानी निकल आया और जब उसे लेबारटरी टैस्ट करवाया गया तो वहां के मौजूद कुओं में सबसे बेहतरीन पानी

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

मक्का के लोग बिलाल रज़ि के पैरों में रस्सी डाल कर उस को गलियों में खींचा करते थे, मक्का की गलियाँ, मक्का के मैदान बिलाल के लिए अमन का स्थान नहीं थे बल्कि अज़ाब और तिरस्कार और उपहास का स्थान थे।

जब मक्का फ़तह हुआ तो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बिलाल रज़ि के हाथ में एक झंडा दे दिया और ऐलान कर दिया कि हे मक्का के सरदारो अगर अब तुम अपनी जानें बचाना चाहते हो तो बिलाल रज़ि के झंडे के नीचे आकर खड़े हो जाओ मानो वह बिलाल रज़ि जिसके सीने पर मक्का के बड़े बड़े सरदार नाचा करते थे उस के बारे में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का वालों को बताया कि आज तुम्हारी जानें अगर बच सकती हैं तो इस की यही सूरत है कि तुम बिलाल रज़ि की ग़ुलामी में आ जाओ।

क़ुर्बानियां देनी पड़ती हैं तभी स्थान मिलता है और इस्लाम की यह ख़ूबसूरत शिक्षा है कि जो क़ुर्बानियां करने वाले हैं, जो शुरू से ही वफ़ा दिखाने वाले हैं उनका मुक़ाम बहरहाल ऊंचा है चाहे वह हब्शी ग़ुलाम हो या किसी नस्ल का ग़ुलाम हो।

यह वह बदला था जो यूसुफ़ के बदला से भी ज़्यादा शानदार था। इसलिए कि यूसुफ़ ने अपने बाप के लिए अपने भाईयों को माफ़ किया था। जिसके लिए किया वह उस का बाप था और जिनको किया वे उस के भाई थे और मुहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने चाचों और भाईयों को एक ग़ुलाम की जूतियों के माध्यम से माफ़ किया। भला यूसुफ़ का बदला इसके मुक़ाबला में क्या हैसियत रखता है।

आप (स) ने फ़रमाया कि जो नमाज़ भूल जाए तो उसे चाहिए कि जब याद आए उसे पढ़ ले क्योंकि सम्मान वाले अल्लाह ने फ़रमाया है कि नमाज़ को, मेरे ज़िक्र के क़ायम करो।

एक बार रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रोया में उनके पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया बिलाल रज़ि तुम हमको भूल ही गए। कभी हमारी क़ब्र की ज़यारत करने के लिए नहीं आए। वह उसी वक़्त उठे और सफ़र का सामान तैयार कर के मदीना पधारे।

मुअज़्ज़िने रसूल साबिक़ुल हब्शा, अहले जन्नत में शामिल महान बदरी सहाबी हज़रत बिलाल बिन रिबाह रज़ि अल्लाह अन्हो के प्रशंसनीय गुणों का वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 18 सितम्बर 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक़ इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

बदरी सहाबा में हज़रत बिलाल रज़ि अल्लाह तआला अन्हो का वर्णन पिछले ख़ुत्बा में चल रहा था। इसका कुछ हिस्सा बाक़ी था। आज भी वर्णन करूँगा।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जंग ख़ैबर से वापस लौट रहे थे तो रात-भर चलते रहे। फिर जब आप को नींद आई तो आराम के लिए पड़ाव किया और बिलाल रज़ि से फ़रमाया कि "आज रात हमारी नमाज़ के वक़्त की हिफ़ाज़त करो।" फिर हज़रत बिलाल रज़ि ने यह फ़रमाया था कि "हमारी नमाज़ की हिफ़ाज़त करो" का अर्थ यह था कि नमाज़ के वक़्त की हिफ़ाज़त करो और फ़ज्र के वक़्त तुम जगा देना। जब आप ने यह फ़रमाया तो फिर हज़रत बिलाल रज़ि ने जितना उनके लिए मुक़द्दर था नमाज़ पढ़ी। रात नफ़ल पढ़ते रहे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के सहाबा सो गए। जब फ़ज्र का समय क़रीब आया तो बिलाल रज़ि ने सुबह की दिशा की तरफ मुंह करते हुए अर्थात सूरज जहां से निकलता है उस तरफ़ चेहरा करते हुए अपनी सवारी का सहारा लिया और बैठ गए तो बिलाल रज़ि पर भी नींद छा गई जबकि वह अपनी ऊंटनी से टेक लगाए हुए थे। अत: न तो बिलाल रज़ि बेदार हुए और न ही आप के सहाबा में से कोई और यहां तक कि धूप उन पर पड़ी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनमें सबसे पहले जागे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चिन्तित हुए और फ़रमाया बिलाल! हे बिलाल ! बिलाल रज़ि ने निवेदन किया हे रसूलुल्लाह मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान हों। मेरी रूह को भी उसी ज़ात ने रोके रखा जिसने आप को रोके रखा अर्थात नींद का ग़लबा मुझ पर भी आ गया। आप ने फ़रमाया कि रवाना हो। अत: उन्होंने अपनी सवारियों को थोड़ा सा चलाया। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रोका। फिर वुज़ू फ़रमाया और थोड़ी देर बाद बिलाल रज़ि को इरशाद फ़रमाया। उन्होंने नमाज़ की इक़ामत कही। फिर आप ने इन सबको सूरज निकलने के बाद सुबह की नमाज़ पढ़ाई। जब आप नमाज़ पढ़ चुके तो आप ने फ़रमाया कि जो नमाज़ भूल जाए तो उसे चाहिए कि जब याद आए उसे पढ़ ले क्योंकि सम्मान वाले अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि नमाज़ को मेरे वर्णन के लिए स्थापित करो।

(सुनन इब्न माजा किताबुस्सलात बाब मन नाम उन अलसलो ओ नसीहा हदीस697)

फ़तह मक्का के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब ख़ाना कअबा में दाख़िल हुए तो आप के साथ हज़रत बिलाल रज़ि भी थे। हज़रत इब्ने उम्र रज़ि रिवायत करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़तह मक्का के दिन मक्का में आए और हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाह तआला अन्हो बिन तल्हा को बुलाया। उन्होंने दरवाज़ा खोला तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत बिलाल रज़ि और हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि और हज़रत उस्मान बिन तल्हा रज़ि अंदर गए और फिर दरवाज़ा बंद कर दिया और आप उस में कुछ देर ठहरे। फिर निकले। हज़रत इब्ने उम्र कहते थे कि मैं जल्दी से आगे बढ़ा और हज़रत बिलाल रज़ि से पूछा तो उन्होंने कहा कि आप ने कअबा में नमाज़ पढ़ी है। अर्थात रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कअबा में नमाज़ पढ़ी है। मैंने कहा किस जगह? कहा इन सतूनों के मध्य। हज़रत इब्ने उम्र रज़ि कहते थे मुझ से रह गया कि मैं उनसे पूछूँ कि आप ने कितनी रकअतें नमाज़ पढ़ी है।

(सही अल-बुख़ारी किताबुस्सलात बाबुल अबवाब वलग़ुलक़ लिल्कअब वल्मसाजिद हदीस 468)

हज़रत बिलाल रज़ि लोगों को बाद में बताया करते थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ाना कअबा के अन्दर किस जगह खड़े हो कर नमाज़ पढ़ी थी। हज़रत इब्ने अबी मुलैक़: से रिवायत है कि फ़तह मक्का के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत बिलाल रज़ि को कअबा की छत पर अज़ान देने का हुक्म दिया। इस पर हज़रत बिलाल रज़ि ने कअबा की छत पर अज़ान दी

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 177 "बिलाल बिन रिबाह" दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2017 ई)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि फ़तह मक्का के अवसर पर हज़रत बिलाल रज़ि का वर्णन करते हुए ब्यान फ़रमाते हैं कि हज़रत अब्बास रज़ि अल्लाह तआला अन्हो अबू सुफ़ियान को लेकर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मज्लिस में हाज़िर हुए। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबू सुफ़ियान को देखा और फ़रमाया तेरा बुरा हाल हो क्या तुझे अभी यक़ीन नहीं आया कि ख़ुदा एक है? अबू सुफ़ियान ने कहा विश्वास क्यों नहीं आया यदि कोई दूसरा ख़ुदा होता तो हमारी मदद न करता!। आप ने फ़रमाया: तेरा बुरा हाल हो क्या तुझे अभी यक़ीन नहीं आया कि मुहम्मद अल्लाह का रसूल है ? कहने लगा अभी उसके बार में यक़ीन नहीं हुआ। हज़रत अब्बास रज़ि ने अबूसुफ़ियान को कहा कमबख़्त बैअत कर लो। इस वक़्त तेरी और तेरी क़ौम की जान बचती है। कहने लगा अच्छा। कर लेता हूँ। वहां तो उसने यूं ही बैअत कर ली। उनके कहने पर बैअत कर ली। कोई दिल से बैअत नहीं थी परन्तु बाद में जा कर सच्चा मुसलमान हो गया। ख़ैर बैअत कर ली तो अब्बास रज़ि अल्लाह तआला अन्हो कहने लगे। अब मांग अपनी क़ौम के लिए वर्ना तेरी क़ौम हमेशा के लिए तबाह हो जाएगी। मुहाजरीन का दिल उस वक़्त डर रहा था। वह तो मक्का के रहने वाले थे और समझते थे कि एक बार मक्का की इज़्ज़त ख़त्म हुई तो फिर मक्का की इज़्ज़त बाक़ी नहीं रहेगी। वह बावजूद इसके कि उन्होंने बड़े बड़े अत्याचार बर्दाश्त किए थे। फिर भी वे दुआएं करते थे कि किसी तरह सुलह हो जाए। परन्तु अन्सार उनके मुक़ाबला में बड़े जोश में थे। मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा कि माँगो। कहने लगा हे रसूलुल्लाह ! क्या आप अपनी क़ौम पर रहम नहीं करेंगे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो बड़े दयालु तथा उपकारी हैं और फिर मैं आपका रिश्तेदार हूँ। भाई हूँ। मेरा भी कोई सम्मान होना चाहिए। मैं मुसलमान हुआ हूँ। आप ने फ़रमाया अच्छा जाओ और मक्का में ऐलान कर दो कि जो व्यक्ति अब्बू सुफ़ियान के घर में घुसेगा उसे पनाह दी जाएगी। कहने लगा हे रसूलुल्लाह! मेरा घर है कितना और इस में कितने आदमी आ सकते हैं? इतना बड़ा शहर है, इसका मेरे घर में कहाँ ठिकाना हो सकता है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अच्छा जो व्यक्ति ख़ाना कअबा में चला जाएगा उसे अमान दी जाएगी। अबू सुफ़ियान ने कहा हे अल्लाह के रसूल!फिर भी लोग बच रहेंगे। आप ने फ़रमाया अच्छा जो हथियार फेंक देगा उसे भी कुछ नहीं कहा जाएगा। कहने लगा हे अल्लाह के रसूल फिर भी लोग रह जाऐंगे। आप ने फ़रमाया अच्छा जो अपने घर के दरवाज़े बंद कर लेगा उसे भी पनाह दी जाएगी। उसने कहा हे अल्लाह के रसूल रास्ते वाले जो हैं वे तो बेचारे मारे जाऐंगे। आप ने फ़रमाया बहुत अच्छा लाओ। एक झंडा बिलाल रज़ि का तैयार करो। अबी रुवैहा रज़ि अल्लाह तआला अन्हो एक सहाबी थे। आप ने जब मदीना में मुहाजरीन और अन्सार को आपस में भाई भाई बनाया था तो अबी रुवैहा रज़ी अल्लाह तआला अन्हो को बिलाल का भाई बनाया था। शायद उस वक़्त बिलाल रज़ि थे नहीं या कोई और मस्लिहत थी। बहरहाल आप ने बिलाल रज़ि का झंडा बनाया और अबी रुवैहा को दिया और फ़रमाया कि यह बिलाल रज़ि का झंडा है। यह इसे लेकर चौक में खड़ा हो जाए और ऐलान कर दे कि जो व्यक्ति बिलाल रज़ि के झंडे के नीचे खड़ा होगा उसको निजात दी जाएगी। अबू सुफ़ियान कहने लगा बस अब काफ़ी हो गया अब मक्का बच जाएगा। कहने लगा अब मुझे आज्ञा दीजिए कि मैं जाऊं। आप ने फ़रमाया जा। अब सरदार ख़ुद ही हथियार फेंक चुका था ,ख़बर पहुंचने या न पहुंचने का सवाल ही नहीं था। अब्बू सुफ़ियान घबराया हुआ मक्का में दाख़िल हुआ और यह कहता जाता था लोगो ! अपने-अपने घरों के दरवाज़े बंद कर लो। लोगो अपने हथियार फेंक दो। लोगो ! ख़ाना कअबा में चले जाओ। बिलाल रज़ि का झंडा खड़ा हुआ है उस के नीचे खड़े हो जाना। इतने में लोगों ने दरवाज़े बंद करने शुरू कर दिए। कुछ ने ख़ाना कअबा में घुसना शुरू कर दिया। लोगों ने हथियार बाहर ला-ला कर फेंकने शुरू किए। इतने में इस्लामी लश्कर शहर में दाख़िल हुआ और लोग बिलाल के झंडे के नीचे जमा हो गए। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि फ़रमाते हैं कि इस घटना में जो सबसे ज़्यादा महान बात है वह बिलाल रज़ि का झंडा है। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बिलाल रज़ि का झंडा बनाते हैं और फ़रमाते हैं कि जो व्यक्ति बिलाल रज़ि के झंडे के नीचे खड़ा हो जाएगा उसको पनाह दी जाएगी हालाँकि सरदार तो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थे परन्तु मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का कोई झंडा नहीं खड़ा किया जाता। आप के बाद क़ुर्बानी करने वाले अबू बकर रज़ि थे परन्तु अबू बकर का भी कोई झंडा नहीं खड़ा किया जाता। उनके बाद मुसलमान होने वाले रईस उमर रज़ि थे परन्तु उमर का भी कोई झंडा नहीं खड़ा किया जाता। उनके बाद उस्मान रज़ि प्रसिद्ध थे और आप के दामाद थे परन्तु उस्मान रज़ि का भी झंडा नहीं खड़ा किया जाता। उनके बाद अली रज़ि थे जो आप के भाई भी थे और आप के दामाद भी थे परन्तु अली का कोई झंडा नहीं खड़ा किया जाता। फिर अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि वह व्यक्ति थे जिनके बार में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि आप वह व्यक्ति हैं कि जब तक आप ज़िन्दाा हैं मुसलमान क़ौम में मतभेद नहीं होगा परन्तु अब्दुर्रहमान रज़ि का कोई झंडा नहीं बनाया जाता। फिर अब्बास रज़ि अल्लाह तआला अन्हो आप के चाचा थे और कई बार वह गुस्ताख़ी भी कर लेते थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने बोल लिया करते थे तो आप नाराज़ न होते परन्तु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनका भी कोई झंडा नहीं बनाया। फिर सारे रईस और चोटी के आदमी मौजूद थे। ख़ालिद बिन वलीद रज़ि जो एक सरदार का बेटा, ख़ुद बड़ा प्रसिद्ध इन्सान था, मौजूद था। अमरो बिन आस रज़ि एक सरदार का बेटा था। इसी तरह और बड़े बड़े सरदारों के बेटे थे परन्तु उनमें से किसी एक का झंडा नहीं बनाया जाता। झंडा बनाया जाता है तो बिलाल रज़ि का बनाया जाता है। क्यों? इस का क्या कारण था? इस का कारण यह था कि ख़ाना कअबा पर जब हमला होने लगा था तो अबू बकर रज़ि देख रहे थे कि जिनको मारा जाने वाला है वे उसके भाई हैं और उसने ख़ुद भी कह दिया था कि हे अल्लाह के रसूल क्या वे अपने भाइयों को मारेंगे? वे ज़ुल्मों को भूल चुका था और जानता था कि ये मेरे भाई हैं। उमर भी कहते तो यही थे कि हे अल्लाह के रसूल इन काफ़िरों को मारिए परन्तु फिर भी जब आप उनको माफ़ करने पर आए तो वह अपने दिल में यही कहते होंगे कि अच्छा हुआ हमारे भाई बख़्शे गए। उस्मान रज़ि और अली रज़ि भी कहते होंगे कि हमारे भाई बख़्शे गए। उन्होंने हमारे साथ सख़्तियां कर लीं तो क्या हुआ। ख़ुद रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी उनको माफ़ करते समय यही समझते होंगे कि उनमें मेरे चाचा भी थे, भाई भी थे। उनमें मेरे दामाद, प्रिय और रिश्तेदार भी थे। यदि मैंने उनको क्षमा कर दिया तो अच्छा ही हुआ। मेरे अपने रिश्तेदार बच गए। सिर्फ एक व्यक्ति था जिसकी मक्का में कोई रिश्तेदारी नहीं थी। जिसकी मक्का में कोई ताक़त नहीं थी। जिसका मक्का में कोई साथी नहीं था और उस की असहायता की हालत में उस पर वह ज़ुल्म किया जाता जो न अबू बकर रज़ि पर हुआ ,न अली रज़ि पर हुआ, न उस्मान रज़ि पर हुआ, न उमर रज़ि पर हुआ बल्कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर भी नहीं हुआ।

पिछली एक रिवायत जो मैं ने पिछले सप्ताह वर्णन की थी इस में भी यह वर्णन हुआ था कि हज़रत अबू बकर रज़ि पर भी और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर भी ज़ुल्म हुए परन्तु ये रिश्तेदारियों के कारण से बचे रहे थे परन्तु मैं ने स्पष्ट कर दिया थी कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर भी अत्याचार हुए और हज़रत अबू बकर रज़ि पर भी अत्याचार हुए। और सिर्फ बिलाल रज़ि पर ऐसे अत्याचार हुए थे जो किसी पर नहीं हुए। यहां भी हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने यह इन्कार नहीं किया कि आप लोगों पर अत्याचार नहीं हुए बल्कि फ़रमाया कि वह अत्याचार जो बिलाल रज़ि पर हुआ वह किसी और पर नहीं हुआ।

फिर आप ने इसका विस्तृत वर्णन किया की वे क्या अत्याचार था। वह अत्याचार यह था कि जलती और तपती हुई रेत पर बिलाल रज़ि को नंगा लिटा दिया जाता था। तुम देखो नंगे-पाँव में मई और जून में नहीं चल सकते। उसको नंगा कर के तपती रेत पर लिटा दिया जाता था। फिर कीलों वाले जूते पहन कर नौजवान उसके सीने पर नाचते थे और कहते थे कि कहो ख़ुदा के सिवा और उपास्य हैं। कहो मुहम्मद

रसूलुल्लाह झूठा है और बिलाल रज़ि आगे से अपनी हब्शी ज़बान में जब वह बहुत मारते कहते थे

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ۔ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ

कि वह व्यक्ति आगे से यही जवाब देता था कि तुम मुझ पर कितना भी अत्याचार करो मैंने जब देख लिया है कि ख़ुदा एक है तो दो किस तरह कह दूं और जब मुझे पता है कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुदा के सच्चे रसूल हैं तो मैं उन्हें झूठा किस तरह कह दूं? इस पर वे और मारना शुरू कर देते थे। गर्मियों के महीनों के मौसम में, इन महीनों में जब गर्मियां होती हैं इस मौसम में इस के साथ यही हाल होता था। इसी तरह सर्दीयों में वे यह करते थे कि उनके पैरों में रस्सी डाल कर उन्हें मक्का की पत्थरों वाली गलियों में घसीटते थे। उनका चमड़ा ज़ख़्मी हो जाता था अर्थात खाल ज़ख़्मी हो जाती थी। वे घसीटते थे और कहते थे कहो झूठा है मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम। कहो ख़ुदा के सिवा और उपास्य हैं वह कहते

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ۔ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ

अब जबकि इस्लामी लश्कर दस हज़ार की संख्या में दाख़िल होने के लिए आया तो बिलाल रज़ि के दिल में ख़्याल आया होगा कि आज उन बूटों का बदला लिया जाएगा जो मेरे सीने पर नाचते थे। आज उन मारों का बदला भी मुझे मिलेगा जिस तरह मुझे ज़ालिमाना तौर पर मारा गया था परन्तु जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो व्यक्ति अबू सुफ़ियान के घर में दाख़िल हो गया वह माफ़। जो ख़ाना कअबा में दाख़िल हो गया वह माफ़। जिसने अपने हथियार फेंक दिए वह माफ़। जिसने अपने घर के दरवाज़े बंद कर लिए वे माफ़ तो बिलाल के दिल में ख़्याल आया होगा कि यह तो अपने सारे भाइयों को माफ़ कर रहे हैं और अच्छा कर रहे हैं परन्तु मेरा बदला तो रह गया। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने देखा कि आज सिर्फ एक व्यक्ति है जिसको मेरे माफ़ करने से कष्ट पहुंच सकता है और वह बिलाल रज़ि है कि जिनको मैं माफ़ कर रहा हूँ वे उसके भाई नहीं। जो उसको दु:ख दिया गया है वह और किसी को नहीं दिया गया। आप ने फ़रमाया मैं इसका बदला लूँगा और इस तरह लूँगा कि मेरी नबुव्वत की भी शान बाक़ी रहे और बिलाल रज़ि का दिल भी ख़ुश हो जाए। आप ने फ़रमाया बिलाल रज़ि का झंडा खड़ा करो और उन मक्का के सरदारों को जो जूतियां लेकर उसके सीने पर नाचा करते थे, जो उसके पांव में रस्सी डाल कर घसीटा करते थे, जो उसे तपती रेतों पर लिटाया करते थे कह दो कि यदि अपनी और अपने बीवी बच्चों की जान बचानी है तो बिलाल रज़ि के झंडे के नीचे आ जाओ। मैं समझता हूँ जब से दुनिया पैदा हुई है, जब से इन्सान को ताक़त हासिल हुई है और जब से कोई इन्सान दूसरे इन्सान से अपने ख़ून का बदला लेने पर तैयार हुआ है और इसको ताक़त मिली है इस प्रकार का महान बदला किसी इन्सान ने नहीं लिया। जब बिलाल रज़ि का झंडा ख़ाना कअबा के सामने मैदान में गाढ़ा गया होगा। जब अरब के रईस, वे रईस जो उसको पैरों से मसला करते थे और कहा करते थे कि बोलता है कि नहीं कि मुहम्मद रसूलुल्लाह झूठा है। और अब जब नज़ारा बदला, जब हालात बदले तो अब वे दौड़ दौड़ कर अपने बीवी बच्चों के हाथ पकड़ पकड़ कर और ला-ला कर बिलाल रज़ि के झंडे के नीचे लाते होंगे कि हमारी जान बच जाए। तो उस वक़्त बिलाल रज़ि का दिल और उसकी जान किस तरह मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर निछावर हो रही होगी। वह कहता होगा मुझे तो ख़बर नहीं इन कुफ़्फ़ार से बदला लेना था या नहीं या ले सकता था कि नहीं अब वह बदला ले लिया गया है कि हर व्यक्ति जिसकी जूतियां मेरे सीने पर पड़ती थीं उसके सिर को मेरी जूती पर झुका दिया गया है। यह वह बदला है कि वे जूतियां जो सीने पर नाचा करती थीं आज उनको पहनने वाले सिर बिलाल की जूती पर झुका दिए गए हैं। यह वह बदला था जो यूसुफ़ के बदला से भी ज़्यादा शानदार था। इसलिए कि यूसुफ़ ने अपने बाप की लिए अपने भाइयों को माफ़ किया था। जिसके लिए किया वह उसका बाप था और जिनको किया वे उसके भाई थे और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने चाचाओं और भाईयों को एक ग़ुलाम की जूतियों के माध्यम से माफ़ किया। भला यूसुफ़ का बदला इसके मुक़ाबले में क्या हैसियत है।

(उद्धरित सैर रुहानी, अनवारुल उलूम भाग 24 पृष्ठ 268 से 273)

पहला जो उद्धरण था "सैर रुहानी" का था। इसी घटना को दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन में भी संक्षेप के साथ वर्णन फ़रमाया है और यह मैं इसलिए कह रहा हूँ कि कुछ लोग लिख देते हैं कि अमुक़ जगह तो यूं फ़रमाया था। दोनों बातों में विस्तार और संक्षेप के इलावा कोई अन्तर नहीं है। कुछ लोग बड़े नुक्ते निकाल कर अन्तर भी बताने शुरू कर देते हैं। व्यावहारिक रूप से भी और नतीजे के तौर पर भी एक ही चीज़ है।

बहरहाल यहां जो वर्णन है वह इस तरह है कि "अबू सुफ़ियान ने कहा हे अल्लाह के रसूल यदि मक्का के लोग तलवार न उठाएं तो क्या वे अमन में होंगे? आप ने फ़रमाया हाँ हर व्यक्ति जो अपने घर का दरवाज़ा बंद कर ले उसे अमन दिया जाएगा। हज़रत अब्बास रज़ि ने कहा हे अल्लाह के रसूल अबू सुफ़ियान गर्व पसंद करने वाला आदमी है इसका अर्थ यह है कि मेरी इज़्ज़त का भी कोई सामान किया जाए।" यह हज़रत अब्बास रज़ि के हवाले से अधिक बात है। "आप ने फ़रमाया बहुत अच्छा, जो व्यक्ति अबू सुफ़ियान के घर में चला जाए उसको भी अमन दिया जाएगा। जो मस्जिद कअबा में घुस जाये उसको भी अमन दिया जाएगा। जो अपने हथियार फेंक दे उसको भी अमन दिया जाएगा। जो अपना दरवाज़ा बंद कर के बैठ जाएगा उसको भी अमन दिया जाएगा। जो हकीम बिन हिज़ाम के घर में चला जाए उसको भी अमन दिया जाएगा। इस के बाद अबी रुवैहा जिनको आप ने बिलाल रज़ि हब्शी ग़ुलाम का भाई बनाया हुआ था उनके बारे में आप ने फ़रमाया हम उस वक़्त अबी रुवैहा रज़ि को अपना झंडा देते हैं जो व्यक्ति अबी रुवैहा रज़ि के झंडे के नीचे खड़ा होगा हम इसको भी कुछ न कहेंगे और बिलाल रज़ि से कहा तुम साथ-साथ यह ऐलान करते जाओ कि जो व्यक्ति अबी रुवैहा रज़ि के झंडे के नीचे आ जाएगा उसको अमन दिया जाएगा यह चीज़ यहां अधिक है कि बिलाल रज़ि साथ ऐलान करते जाएं ।"इस हुक्म में क्या ही सूक्ष्म हिक्मत थी। मक्का के लोग बिलाल रज़ि के पैरों में रस्सी डाल कर उसको गलियों में खींचा करते थे, मक्का की गलियाँ, मक्का के मैदान बिलाल के लिए अमन की जगह नहीं थे बल्कि अज़ाब और अपमान और तिरस्कार का स्थान थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़्याल फ़रमाया कि बिलाल रज़ि का दिल आज बदला की तरफ़ बार-बार माइल होता होगा। इस वफ़ादार साथी का बदला लेना भी निहायत ज़रूरी है परन्तु यह भी ज़रूरी है कि हमारा बदला इस्लाम की शान के अनुसार हो। आत: आप ने बिलाल रज़ि का बदला इस तरह न लिया कि तलवार के साथ उसके दुश्मनों की गर्दनें काट दी जाएं बल्कि उसके भाई के हाथ में एक बड़ा झंडा देकर खड़ा कर दिया और बिलाल रज़ि को इस उद्देश्य के लिए निर्धारित कर दिया कि वह ऐलान कर दे कि जो कोई मेरे भाई के झंडे के नीचे आकर खड़ा होगा उसे अमन दिया जाएगा। कैसा शानदार यह बदला था, कैसा सुन्दर यह बदला था। जब बिलाल रज़ि बुलंद आवाज़ से यह ऐलान करता होगा कि हे मक्का वालो! आओ मेरे भाई के झंडे के नीचे खड़े हो जाओ तुम्हें अमन दिया जाएगा तो इसका दिल ख़ुद ही बदले की भावनाओं से ख़ाली होता जाता होगा और उसने महसूस कर लिया होगा कि जो बदला मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरे लिए चुना इस से ज़्यादा शानदार और इस से ज़्यादा सुन्दर बदला मेरे लिए और कोई नहीं हो सकता।"

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन अनवारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 340.341)

फिर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह तआला अन्हो ने हज़रत बिलाल रज़ि के सब्र और फ़तह मक्का के समय उनकी हालत का वर्णन करते हुए यूं बयान फ़रमाया है कि "ये कष्ट थे जो बिलाल को पहुंचाए गए।" मक्का में जो कष्ट होते थे उनका वर्णन पहले भी हो चुका है।"परन्तु जानते हो जब मक्का फ़तह हुआ तो वह बिलाल रज़ि हब्शी ग़ुलाम जिसके सीने पर मक्का के बड़े बड़े अफ़्सर नाचा करते थे उसको रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क्या इज़्ज़त दी? और किस तरह उसका कुफ़्फ़ार से बदला लिया? जब मक्का फ़तह हुआ तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बिलाल रज़ि के हाथ में एक झंडा दे दिया और ऐलान कर दिया कि हे मक्का के सरदारो यदि अब तुम अपनी जानें बचाना चाहते हो तो बिलाल रज़ि के झंडे के नीचे आकर खड़े हो जाओ। मानो वह बिलाल रज़ि जिसके सीने पर मक्का के बड़े बड़े सरदार नाचा करते थे उसके बारे में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का वालों को बताया कि आज तुम्हारी जानें यदि बच सकती हैं तो इस की यही अवस्था है कि तुम बिलाल रज़ि की ग़ुलामी में आ जाओ हालाँकि बिलाल रज़ि ग़ुलाम था और वह चौधरी थे।"

(आइन्दा वही कौमें इज़्ज़त पाएँगी जो माली तथा जानी क़ुर्बानियों में हिस्सा लेंगी। अनवारुल उलूम भाग 21 पृष्ठ 164)

अत: हर जगह यही नतीजा है। चाहे झंडा उनके भाई के सपुर्द किया तब भी बिलाल रज़ि को साथ किया। बिलाल रज़ि के नाम पर झंडा किया तब भी और बिलाल रज़ि के हाथ में दिया तो नतीजा वही है । थोड़े से फ़र्क़ के साथ व्यावहारिक रूप से ही बात वर्णन हो रही है और नतीजा भी वही निकाला जा रहा है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ि से रिवायत है कि ईद के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आगे आगे भाले को लेकर चला जाता था। ईद वाले दिन एक व्यक्ति आगे चलता था उसके हाथ में भाला होता था और जिसको प्राय हज़रत बिलाल रज़ि उठाए हुए होते थे। मुहम्मद बिन उम्र वर्णन करते हैं कि हज़रत बिलाल रज़ि उसे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने गाड़ देते थे। उस ज़माने में ईद-गाह मैदान होता था। खुला मैदान था वही ईदगाह थी।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 177 "बिलाल बिन रिबाह", दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2017 ई)

एक रिवायत है कि हब्शा के नज्जाशी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तीन भाले तोहफ़े में भेजे थे। एक नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रख लिया। एक हज़रत अली बिन अबू तालिब को दिया और एक हज़रत उम्र बिन ख़त्ताब रज़ि अल्लाह तआला अन्हो को दिया। हज़रत बिलाल रज़ि इस भाले को जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने लिए रखा था दोनों ईदों में आप के आगे-आगे लेकर चलते थे यहां तक कि उसे आप के आगे गाड़ देते और आप उसी की तरफ़ नमाज़ पढ़ते। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के देहान्त के बाद हज़रत बिलाल रज़ि इसी तरह इस भाले को हज़रत अबू बकर रज़ि के आगे लेकर चला करते थे।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 178 "बिलाल बिन रिबाह, दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2017 ई)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के देहान्त के बाद रवायतों में यही आता है कि हज़रत बिलाल रज़ि जिहाद में शामिल होने के लिए सीरिया की तरफ़ चले गए थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के देहान्त के बाद इस तरह वर्णन हुआ है कि हज़रत बिलाल रज़ि हज़रत अबू बकर रज़ि के पास आए और कहा कि हे रसूल के ख़लीफ़ा ! मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना है कि मोमिन का सबसे अफ़ज़ल कर्म अल्लाह की राह में जिहाद है। हज़रत अबूबकर रज़ि ने कहा बिलाल रज़ि तुम क्या चाहते हो? हज़रत बिलाल रज़ि ने जवाब दिया कि मैं चाहता हूँ कि मुझे अल्लाह के रास्ते में जिहाद के लिए भेज दिया जाए यहां तक कि मैं मारा जाऊं। हज़रत अबू बकर रज़ि ने कहा कि बिलाल मैं तुम्हें अल्लाह का वास्ता देता हूँ और अपना सम्मान और हक़ याद दिलाता हूँ कि मैं बूढ़ा और वृद्ध हो गया हूँ। मेरी मौत का समय क़रीब आ गया है इस कारण से मेरे पास ठहर जाओ। इस पर हज़रत बिलाल रज़ि हज़रत अबू बकर रज़ी अल्लाह तआला अन्हो के देहान्त तक उनके पास ही रहे। हज़रत अबू बकर रज़ि के देहान्त के बाद हज़रत बिलाल रज़ि हज़रत उम्र रज़ि के पास आए और उनसे भी वही बात कही जो हज़रत अबू बकर रज़ि को कही थी। हज़रत उम्र रज़ि ने भी उन्हें वैसा ही जवाब दिया जैसा हज़रत अबू बकर रज़ि ने दिया था परन्तु हज़रत बिलाल रज़ि न माने। हज़रत बिलाल रज़ि जिहाद पर जाने पर तैय्यार थे और उन्होंने हज़रत उम्र रज़ि के सामने इसी बात का इसरार किया। हज़रत उम्र रज़ि ने उनसे फ़रमाया कि मैं तुम्हारे बाद अज़ान देने की ज़िम्मेदारी किस के सपुर्द करूँगा? हज़रत बिलाल रज़ि ने निवेदन किया कि हज़रत सअद रज़ि के क्योंकि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में अज़ान दी हुई है। अत: हज़रत उमर रज़ि ने हज़रत सअद रज़ि और उनके बाद उनकी औलाद के सपुर्द अज़ान की ज़िम्मेदारी लगाई और हज़रत बिलाल रज़ि को उनके इसरार के कारण से जिहाद पर भेज दिया।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 178 "बिलाल बिन रिबाह दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 2017 ई)

यह एक रिवायत है और एक रिवायत में हज़रत बिलाल रज़ि और हज़रत अबू बकर रज़ि के अज़ान देने के हवाले से जो वार्तालाप हुआ उसका भी यूं वर्णन मिलता है कि मूसा बिन मुहम्मद अपने पिता से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का देहान्त हुआ तो हज़रत बिलाल रज़ि ने उस दिन उस समय अज़ान दी कि अभी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दफ़न न किया गया था। जब उन्होंने

أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُولُ اللهِ

के शब्द अपनी ज़बान में कहे। जब असहदो कहते थे। तो मस्जिद में लोगों के रोने के कारण से हिचकियाँ बंध गईं। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दफ़न कर दिया गया तो हज़रत अबू बकर रज़ि ने हज़रत बिलाल रज़ि को अज़ान देने को कहा। हज़रत बिलाल रज़ि ने जवाब में कहा यदि तो आपने मुझे इसलिए आज़ाद किया है कि मैं आपके साथ रहूं तो इसका रास्ता तो यही है जिस तरह आप कह रहे हैं परन्तु यदि आपने मुझे अल्लाह के लिए आज़ाद किया है तो मुझे उसके लिए छोड़ दीजिए जिसके लिए मुझे आज़ाद किया है। हज़रत अबू बकर रज़ि ने कहा कि मैंने तुम्हें अल्लाह के लिए आज़ाद किया है। इस पर हज़रत बिलाल रज़ि ने कहा कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के देहान्त के बाद किसी के लिए अज़ान न दूँगा। हज़रत अबू बकर रज़ि ने कहा यह आपकी इच्छा है। इस के बाद हज़रत बिलाल रज़ि मदीना में ही निवासी रहे यहां तक कि हज़रत उम्र रज़ि के ख़िलाफ़त के ज़माना में सीरिया के लिए लश्कर रवाना हुए तो हज़रत बिलाल रज़ि भी इन लश्करों के साथ सीरिया चले गए।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 178 "बिलाल बिन रिबाह, दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2017 ई)

उसदुल ग़ाबह की एक रिवायत के अनुसार हज़रत बिलाल रज़ि ने हज़रत अबू बकर रज़ि से कहा कि यदि आपने मुझे अपने लिए आज़ाद किया है तो मुझे अपने पास रोक लें परन्तु यदि आपने मुझे अल्लाह की राह में आज़ाद किया है तो मुझे अल्लाह की राह में जिहाद के लिए जाने दें। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ि ने हज़रत बिलाल रज़ि से फ़रमाया जाओ। इस पर हज़रत बिलाल रज़ि सीरिया चले गए और देहान्त तक वहीं रहे जो प्राय रिवायतें हैं वे यही हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ि के ज़माना में नहीं गए थे बल्कि हज़रत उमर रज़ि के ज़माना में गए थे और एक कथन के अनुसार हज़रत बिलाल रज़ि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के देहान्त के बाद हज़रत अबू बकर रज़ि के ख़िलाफ़त के ज़माना में भी अज़ान देते रहे हैं। यह भी रिवायत है।

(उसदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा सजिल्द भाग 1 पृष्ठ 416 "बिलाल बिन रिबाह दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान)

एक रिवायत यूं वर्णन की गई है कि एक बार हज़रत बिलाल रज़ि ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़्वाब में देखा कि आप फ़रमाते हैं हे बिलाल रज़ि यह कैसी कठोरता है। क्या अभी वह वक़्त नहीं आया कि तुम हमारे दर्शन के लिए आओ। हज़रत बिलाल रज़ि बहुत ही दुख की हालत में बेदार हुए, सीरिया में

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

होते थे और सवार हो कर मदीना की तरफ़ चल दिए और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के रोज़ा मुबारक पर हाज़िर हो कर निरन्तर रोने लगे और तड़पने लगे। इतने में हज़रत हसन रज़ि और हुसैन रज़ि भी आ गए। हज़रत बिलाल रज़ि ने उन्हें चूमा और उन्हें गले लगाया तो हज़रत हसन रज़ि और हज़रत हुसैन रज़ि ने हज़रत बिलाल रज़ि से कहा कि हम चाहते हैं कि सुबह की अज़ान आप दें तो आप मस्जिद की छत पर चढ़ गए। जब बिलाल रज़ि ने

أَللّٰهُ اَكْبَرُ أَللّٰهُ اَكْبَرُ

के शब्द कहे तो रावी कहते हैं कि मदीना कांप उठा। फिर जब उन्होंने

أَشْهَدُ أَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

के शब्द कहे तो और अधिक हरकत हुई। लोगों में एक दम बेदारी पैदा हुई। फिर जब उन्होंने

أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

के शब्द कहे तो औरतें अपने कमरों से बाहर आ गईं। रावी कहते हैं कि उस दिन से अधिक रोने वाले मर्द और रोने वाली औरतें नहीं देखी गई थीं।

(उसदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा सजिल्द भाग 1 पृष्ठ 417 "बिलाल बिन रिबाह दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ज़माना और यह अज़ान याद आ गई और लोग बेचैन हो गए।

हज़रत उमर रज़ि के ख़िलाफ़त के ज़माना में जब हज़रत बिलाल रज़ि ने जिहाद के लिए जाने की इजाज़त मांगी थी तो हज़रत उमर रज़ि ने पूछा कि आपको क्या चीज़ अज़ान देने से रोकती है। इस पर हज़रत बिलाल रज़ि ने जवाब दिया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म से अज़ान दी यहां तक कि आप का देहान्त हो गया। फिर मैंने हज़रत अबू बकर रज़ि के हुक्म से अज़ान दी क्योंकि वह मेरी नेअमत के निगरान थे यहां तक कि उनका भी देहान्त हो गया। मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना है कि बिलाल रज़ि! कोई इबादत अल्लाह के रास्ता में जिहाद से बढ़कर नहीं है, अत: हज़रत बिलाल रज़ि सीरिया चले गए। जब हज़रत उम्र रज़ि सीरिया तशरीफ़ ले गए तो हज़रत उम्र रज़ि के कहने पर हज़रत बिलाल रज़ि ने अज़ान दी। रावी कहते हैं कि हमने उस दिन से पहले आपको इतना रोते हुए नहीं देखा।

(उसदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा सजिल्द भाग 1 पृष्ठ 416-417 "बिलाल बिन रिबाह दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह तआला अन्हो हज़रत बिलाल रज़ि रज़ि अल्लाह तआला अन्हो के आख़िरी ज़माना का वर्णन करते हुए वर्णन करते हैं कि हज़रत बिलाल रज़ि आख़िरी उम्र में सीरिया चले गए थे। यहां यह वर्णन भी है कि उनको लोग रिश्ता नहीं देते थे परन्तु पहले वर्णन हो चुका है कि उनकी कई शादियां थीं और रिश्ते हुए थे। हो सकता है कि कुछ सीरिया जाने के लिए रिश्ता नहीं देते या शाम जा कर रिश्ता नहीं मिलता होगा। बहरहाल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में आप की कई शादियों की रिवायत मिलती है तो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि लिखते हैं कि उन्होंने सीरिया में एक जगह रिश्ते के बारे में निवेदन किया और कहा कि मैं हब्शी हूँ यदि चाहो तो रिश्ता न दो और यदि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सहाबी समझ कर मुझे रिश्ता दे दो तो बड़ी मेहरबानी होगी। उन्होंने रिश्ता दे दिया और वह सीरिया में ही ठहर गए। बहरहाल पहले भी उनकी शादियां थीं। हो सकता है पहली बीवियां फ़ौत हो गई थीं या साथ जाने वाली कोई नहीं थी या शाम में शादी करना चाहते थे। परन्तु बहरहाल यह थोड़ा वर्णन यहां हो जाए कि शादियां उनकी पहले थीं। यद्यपि कि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने यह लिखा है। बाक़ी रिवायतें भी यही कहती हैं कि इनको कोई रिश्ता नहीं देता था। किस कारण से लिखा है अल्लाह बेहतर जानता है। बहरहाल वहां उन्होंने रिश्ता मांगा। वहां उनकी शादी हो गई और वह शाम में ठहर गए। जो असल चीज़ है वह यही है जो आगे रोया का वर्णन है। शादी तो एक वैसी ही बात आ गई।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने यह लिखा है कि एक बार रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रोया में उनके पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया बिलाल रज़ि तुम हमको भूल ही गए। कभी हमारी क़ब्र की ज़यारत करने के लिए नहीं आए। वह उसी वक़्त उठे और सफ़र का सामान तैयार कर के मदीना तशरीफ़ ले गए और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़ब्र पर रो-रो कर दुआ की। उस वक़्त उनको इतनी रिक़्क़त पैदा हुई कि लोगों में आम तौर पर मशहूर हो गया कि बिलाल रज़ि आए हैं। हज़रत हसन रज़ि और हुसैन रज़ि जो उस वक़्त बड़े हो चुके थे दौड़े हुए आए और कहने लगे आप रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में अज़ान दिया करते थे। उन्होंने कहा हाँ। तो कहने लगे हमें भी अपनी अज़ान सुनाएँ। अत: उन्होंने अज़ान दी और लोगों ने सुनी।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद भाग 25 पृष्ठ 182 ख़ुत्बा जुम्अ: 10 मार्च 1944 ई)

हज़रत उमर रज़ि ने जब अपने ख़िलाफ़त के ज़माना में सीरिया में वज़ीफ़ा के लिए दफ़्तर बनवाए अर्थात एकाऊंट के रजिस्टर इत्यादि बनवाए, खाते इत्यादि बनवाए और सारा रिकार्ड मुकम्मल करवाया तो हज़रत बिलाल रज़ि सीरिया चले गए और वहीं मुजाहिदीन के साथ रहने लग गए। हज़रत उम्र रज़ि ने हज़रत बिलाल रज़ि से पूछा कि हे बिलाल रज़ि तुम अपने वज़ीफ़ा का दफ़्तर किस के पास रखोगे। अर्थात अपने हिसाब किताब की नुमाइंदगी किस के सपुर्द करना चाहते हो। कौन होगा तुम्हारा नुमाइंदा यहां? तो उन्होंने जवाब दिया अबू रुवैहा के पास जिनको मैं उस भाई बनाने के कारण से कभी न छोड़ूँगा जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरे और उनके मध्य स्थापित की थी ।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 176 "बिलाल बिन रिबाह" दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2017 ई)

हज़रत बिलाल रज़ि कि साफ़ बात कहो की एक घटना एक रिवायत में यूं मिलती है। अमरो बिन मैमून अपने पिता से रिवायत करते हैं कि हज़रत बिलाल रज़ि के एक भाई ख़ुद को अरब की तरफ़ मन्सूब करते थे और वह ख़्याल करते थे कि वह उन्हीं में से हैं। उन्होंने अरब की एक औरत को निकाह का पैग़ाम भेजा तो उन्होंने कहा कि यदि हज़रत बिलाल रज़ि आएं तो हम तुमसे निकाह कर देंगे। हज़रत बिलाल रज़ि आए और तशह्हुद पढ़ा। फिर कहा कि मैं बिलाल बिन रिबाह हूँ और यह मेरा भाई है और यह आचरण और धर्म की दृष्टि से अच्छा आदमी नहीं है यदि तुम इस से निकाह करना चाहो तो कर दो और यदि न करना चाहो तो न करो। उन्होंने कहा कि जिसके आप भाई हैं इस से हम निकाह कर देंगे। अत: उन्होंने आप के भाई से निकाह कर दिया।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 179 "बिलाल बिन रिबाह", दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2017 ई)

ज़ैद बिन असलम से रिवायत है कि बनू अबू बुकेर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए कि अमुक़ व्यक्ति से हमारी बहन का निकाह कर दें। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बिलाल रज़ि के बारे में तुम्हारा क्या ख़्याल है? लोग दूसरी बार आए और निवेदन किया हे अल्लाह के रसूल ! हमारी बहन का अमुक व्यक्ति से निकाह कर दें। आप ने फ़रमाया तुम लोगों का बिलाल रज़ि के बारे में क्या ख़्याल है? ये लोग इन्कार कर के चले गए। फिर तीसरी बार आए और निवेदन किया हे अल्लाह के रसूल! हमारी बहन का अमुक व्यक्ति से निकाह कर दें। आप ने फ़रमाया तुम लोगों का बिलाल रज़ि के बारे में क्या ख़्याल है? तुम लोगों का ऐसे व्यक्ति के बारे में क्या ख़्याल है जो जन्नत वालों में से है? रावी कहते हैं इस पर उन लोगों ने हज़रत बिलाल रज़ि से अपनी बहन का निकाह कर दिया।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 179 "बिलाल बिन रिबाह", दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2017 ई)

हवाला जो पहले मैं ने कहा था कि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने लिखा है कि शादियां नहीं हुई थीं। वह बात शायद किसी और पृष्ठभूमि के अधीन हो। शादियां पहले हुई थीं। और यह भी एक हवाला है। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने लिखा है कि "एक बार हज़रत उमर रज़ि के ख़िलाफ़त के ज़माना में वह (अर्थात सुहेल बिन अमरो और अबू सुफ़ियान और कुछ मक्का के रईस जो फ़तह के वक़्त मुसलमान हुए थे हज़रत उमर रज़ि को मिलने के लिए गए। हज़रत उमर रज़ि के ख़िलाफ़त में अबू सुफ़ियान और कुछ दूसरे मक्का के रईस जो फ़तह मक्का के समय मुसलमान हुए थे हज़रत उमर रज़ि को मिलने के लिए गए। संयोग से उसी समय बिलाल रज़ि और अम्मार रज़ि और सुहैब रज़ि इत्यादि भी हज़रत उमर रज़ि से मिलने के लिए आ गए। ये वे लोग थे जो ग़ुलाम रह चुके थे और बहुत ग़रीब

थे परन्तु उन लोगों में से थे जिन्होंने आरम्भ में इस्लाम स्वीकार किया था। हज़रत उमर रज़ि को सूचना दी गई तो उन्होंने बिलाल इत्यादि को पहले मुलाक़ात के लिए बुलाया। अबू सुफ़ियान ने जिसके अंदर शायद अभी तक कुछ जाहलियत की रग बाक़ी थी यह नज़ारा देखा तो उसके जिस्म में आग लग गई। अत: कहने लगा ये अपमान भी हमें देखना था कि हम प्रतीक्षा करें और इन ग़ुलामों को मुलाक़ात का सम्मान प्रदान किया जाए। सुहैल ने फ़ौरन सामने से जवाब दिया कि फिर यह किस का दोष है? मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हम सबको ख़ुदा की तरफ़ बुलाया परन्तु उन्होंने फ़ौरन स्वीकार कर लिया और हमने देर की। फिर उनको हम पर प्राथमिकता प्राप्त हो या न हो?"

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन पृष्ठ 369)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला अन्हो ने इस घटना का वर्णन इस तरह किया है और हज़रत बिलाल रज़ि के स्थान तथा सम्मान का वर्णन फ़रमाते हुए कि हज़रत उमर रज़ि अपनी ख़िलाफ़त के ज़माना में एक बार मक्का में आए तो वही ग़ुलाम जिनको सिर के बालों से पकड़ कर लोग घसीटा करते थे एक-एक कर के हज़रत उमर रज़ि की मुलाक़ात के लिए आना शुरू हुए। वह ईद का दिन था और उन ग़ुलामों के आने से पहले मक्का के बड़े बड़े रईसों के बेटे आपको सलाम करने के लिए हाज़िर हो चुके थे। अभी वो बैठे ही थे कि बिलाल रज़ि आए। वही बिलाल जो ग़ुलाम रह चुके थे, जिनको लोग मारा पीटा करते थे, जिनको खुरदुरे और नोकीले पत्थरों पर नंगे जिस्म से घसीटा करते थे, जिनके सीने पर बड़े बड़े भारी पत्थर रखकर कहा करते थे कि कहो में लात और उज़्ज़ा की उपासना करूँगा परन्तु वह यही कहते थे कि

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه

हज़रत उमर रज़ि ने जब बिलाल रज़ि को देखा तो उन रईसों से फ़रमाया ज़रा पीछे हट जाओ और बिलाल रज़ि को बैठने की जगह दो। अभी वह बैठे ही थे कि एक और ग़ुलाम सहाबी आ गए। हज़रत उमर रज़ि ने फिर इन रईसों से फ़रमाया: ज़रा पीछे हट जाओ और उनको बैठने दो। थोड़ी देर गुज़री थी तो एक और ग़ुलाम सहाबी आ गए। हज़रत उम्र रज़ि ने आदत के अनुसार इन रईसों से फिर फ़रमाया कि ज़रा पीछे हट जाओ और उनको बैठने की जगह दो। संयोग की बात है चूँकि अल्लाह तआला ने उनको अपमानित करना था इसलिए एक के बाद दूसरे आठ दस ग़ुलाम आ गए और हर बार हज़रत उमर रज़ि इन रईसों से यही कहते चले गए कि पीछे हट जाओ और उनको बैठने की जगह दो। इन दिनों बड़े बड़े हाल नहीं बनाए जाते थे बल्कि मामूली कोठड़ियां होती थीं जिनमें अधिक आदमी नहीं बैठ सकते थे। जब समस्त ग़ुलाम सहाबा रज़ि कमरे में भर गए तो मजबूर होकर इन रईसों को जूतियों वाले स्थान में बैठना पड़ा। यह अपमान उनके लिए असहनीय हो गया। वे उसी वक़्त उठे और बाहर आकर एक दूसरे से कहने लगे देखा ! आज हमें कैसे अपमानित किया गया है। ये ग़ुलाम जो हमारी सेवाएं किया करते थे उनको तो ऊपर बिठाया गया है परन्तु हमें पीछे हटने पर मजबूर किया गया है यहां तक कि हटते हटते हम जूतियों वाले स्थान पर जा पहुंचे और सब लोगों की निगाह में अपमानित और बदनाम हुए। एक व्यक्ति जो उनमें से ज़्यादा समझदार था जब उसने ये बातें सुनीं तो कहा ये ठीक है कि हमारा अपमान हुआ है परन्तु सवाल यह है कि आख़िर ऐसा किस की करतूतों से हुआ। हमारे बाप भाई जब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उनके साथियों को मारा पीटा करते थे उस वक़्त ये ग़ुलाम आप पर अपनी जानें फ़िदा किया करते थे। आज चूँकि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हुकूमत है इसलिए तुम ख़ुद ही फ़ैसला कर लो कि उनको मानने वाले किन लोगों को इज़्ज़त देंगे। आया तुमको जो मारा करते थे या उन ग़ुलामों को जो अपनी जानें इस्लाम के लिए क़ुर्बान किया करते थे। यदि उन्हीं को इज़्ज़त मिलनी चाहिए तो फिर तुम्हें आज के सुलूक पर शिकायत क्यों पैदा हुई? तुम्हारे अपने बाप दादा के कर्मों का यह नतीजा है कि तुम्हारे साथ वह सुलूक नहीं हो रहा जो ग़ुलामों के साथ हो रहा है। यह बात उन लोगों की समझ में आ गई। जब एक अक़लमंद व्यक्ति ने यह बात कही तो कहने लगे हम हक़ीक़त को समझ गए परन्तु सवाल यह है कि क्या इस अपमान का कोई इलाज भी है या नहीं। बेशक हमारे बाप दादा से बड़ा क़सूर हुआ है परन्तु आख़िर इस क़सूर का कोई इलाज भी होना चाहिए जिससे यह अपमान का दाग़ हमारी पेशानी से धुल सके। इस पर सब ने फ़ैसला किया कि हमारी समझ में तो कोई बात नहीं आती। चलो हज़रत उमर रज़ि से ही पूछें कि इस अपमान का क्या इलाज है। जब वह दोबारा हज़रत उमर रज़ि के पास गए। उस समय तक मजलिस बर्ख़ास्त हो चुकी थी और सहाबा सब जा चुके थे। उन्होंने हज़रत उमर रज़ि से कहा कि आज हमें इस मज्लिस में आकर जो दुख पहुंचा है इस के बार में हम आप से मश्वरा करने आए हैं। हज़रत उमर रज़ि ने कहा देखो बुरा न मनाना। ये लोग रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा रज़ि थे और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मज्लिस में हमेशा आगे बैठा करते थे। इसलिए में भी मजबूर था कि उन्हें आगे बिठाता। बेशक तुम्हें मेरे इस कर्म से तकलीफ़ हुई होगी परन्तु मैं मजबूर था। उन्होंने कहा कि हम आपकी इस मजबूरी को समझते हैं। हम सिर्फ यह पूछना चाहते हैं कि क्या इस अपमान का कोई इलाज भी है और क्या कोई पानी ऐसा है जिससे यह दाग़ धोया जा सके। हज़रत उमर रज़ि जो इन नौजवानों के बाप दादा की शान तथा शौकत और उनके रोब और दबदबे को देख चुके थे जब उन्होंने इन नौजवानों की यह बात सुनी तो आप की आँखों में आँसू डब डबा आए कि ये लोग अपने गुनाहों के कारण से कहाँ से कहाँ आ गिरे हैं और आप पर वेदना इस क़दर छा गई कि आप उनकी बात का जवाब तक न दे सके। सिर्फ हाथ उठा कर सीरिया की तरफ़ जहां इन दिनों क़ैसर की फ़ौजों से लड़ाई हो रही थी इशारा कर दिया। अभिप्राय यह था कि अब अपमान का यह दाग़ इसी तरह धुल सकता है कि इस लड़ाई में शामिल हो कर अपनी जान दे दो। अत: वे उसी वक़्त बाहर निकले अपने ऊंटों पर सवार हुए और सीरिया की तरफ़ रवाना हो गए और इतिहास बताता है कि उनमें से एक व्यक्ति भी ज़िन्दा वापस नहीं आया। इस तरह उन्होंने अपने ख़ून के साथ इस अपमान के दाग़ को मिटाया जो उनके माथे पर अपने बाप दादा के कर्मों के कारण से लग गया था।

(उद्धरित तफ़सीर कबीर भाग 09 पृष्ठ 289-290)

अत: एक तो यह है कि क़ुर्बानियां देनी पड़ती हैं तभी स्थान मिलता है और इस्लाम की यह ख़ूबसूरत शिक्षा है कि जो क़ुर्बानियां करने वाले हैं, जो शुरू से ही वफ़ादारी दिखाने वाले हैं उनका स्थान बहरहाल ऊंचा है चाहे वह हब्शी ग़ुलाम हो या किसी नस्ल का ग़ुलाम हो। और यह वह स्थान है जो इस्लाम ने हक़ पर रखा है, जो अपनी प्राथमिकता पर रखा है और प्रत्येक को मिलता है। यह नहीं कि कौन अमीर है कौन ग़रीब है। क़ुर्बानियां करने वाले होंगे, वफ़ादारी करने वाले होंगे, अपनी जानें कुर्बान करने वाले होंगे, हर चीज़ क़ुर्बान करने वाले होंगे तो उनको स्थान मिलेगा।

इंशा अल्लाह तआला हज़रत बिलाल रज़ि का यह वर्णन अभी जारी है। आगे भी वर्णन होगा

(अलफ़ज़ल इंटरनेशनल 7 अक्तूबर 2020 पृष्ठ 5 से 10)

☆ ☆ ☆ ☆

दिखावा के लिए बड़ी बड़ी रक़म महर में बांधना

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"हमारे देश में यह ख़राबी है कि नीयत दूसरी होती है और केवल दिखावा के लिए लाख लाख रुपए का महर होता है। सिर्फ डरावे के लिए यह लिखा जाया करता है कि मर्द क़ाबू में रहे और इस से फिर दूसरे परिणान ख़राब निकल सकते हैं। न औरत वालों की नीयत लेने की होती है और न पति की देने की। मेरा मज़हब यह है कि जब ऐसी अवस्था में झगड़ा आ पड़े तो जब तक उस की नीयत साबित न हो कि हाँ अपनी इच्छा से वह इतना ही क़दर महर पर तैय्यार था जितना कि निर्धारित है तब तक निर्धारित महर न दिलाया जाए और इस की हैसियत और रिवाज इत्यादि को सम्मुख रख कर फिर फ़ैसला किया जाए क्योंकि बुरी नीयत का अनुकरण न शरीयत करती है और न क़ानून।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 3 पृष्ठ 284 प्रकाशन कादियान 2003 ई)

(इंचार्ज रिश्ता नाता विभाग ,नज़ारत इस्लाह इरशाद मर्कज़िया कादियान

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

वह था। अब लोग अल्लाह के फ़ज़ल से इस बात को मानने वाले हो गए हैं कि जमाअत अहमदिया ही अल्लाह तआला की इस ज़मीन पर क़ायम की गई जमाअत है और दुआओं से और सदक़ों से अल्लाह तआला उन पर यह फ़ज़ल करता है।

ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट : पिछले 26 साल से इन्सानियत की सेवा में व्यस्त है। अल्लाह के फ़ज़ल से 54 देशों में रजिस्टर्ड हो चुकी है। इस वर्ष कोंगो में मेडीकल सेन्टर लगाया गया। बंगला देश,गोइटे माला, इंडोनेशिया, माली, बेनिन, नाईजर, सेनेगाल और बहुत सारे देशों में मैडीकल सेन्टर लगाए गए, कैंप लगाए गए और हस्पताल और क्लीनिक भी कुछ जगह शुरू करवाए। इसके इलावा नलके लगाने का काम और दूसरी हंगामी मदद का काम भी यह कर रहे हैं और बड़ा अच्छा कर रहे हैं। इस साल फ्री मेडीकल कैंप जो उन्होंने लगाए हैं उनकी संख्या 345 है दुनिया के विभिन्न देशों में जिनमें अफ्रीक़ा के देश शामिल हैं, एशिया के भी और यूरोप के भी, साऊथ अमरीका के भी और उन मेडीकल केम्पस के द्वारा से 2 लाख 30 हज़ार से अधिक मरीज़ों का इलाज किया गया और फ्री दवाइयां बांटी गईं। ऐसी जगहों पर भी गए जहां कोई तिब्बी सुविधाएं उपलब्ध नहीं थीं।

आँखों के फ्री ऑप्रेशन ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट को विभिन्न देशों में ग़रीब असहाय लोगों के आँखों के फ्री ऑप्रेशन की तौफ़ीक़ मिली। इस वर्ष इस प्रोग्राम के अधीन बोरकीना फासो, इंडोनेशिया और नाईजर में 592 ऑप्रेशन किए गए। अब तक इस प्रोग्राम के कुल 15 हज़ार 315 लोगों के फ्री ऑप्रेशन किए जा चुके हैं। बोरकीना फासो में अब तक 8 हज़ार 595 आँखों के मुफ़्त ऑप्रेशन किए गए। इसी तरह ख़ूनदान भी दिए गए। कई हज़ार ख़ून की बोतलें विभिन्न देशों में दी गईं और इस तरह मानव सेवा के और भी बहुत सारे काम हैं, चैरिटीज़ को मदद भी की गई और उनकी दूसरी चीज़ों और ज़िन्दगी की ज़रूरतों का भी ख़्याल रखा गया खासतौर पर इन दिनों में जो वायरस की बीमारी के दिन हैं तो सेवाओं को काफ़ी सराहा गया है जो मुफ़्त मदद की जा रही है।

एम टी ए इंटरनेशनल के दफ़्तर का जहां तक सवाल है इस वक़्त उसके 16 डिपार्टमैंट हैं इस में 496 काम करने वाले दिन रात सेवाएं कर रहे हैं। 275 वालिंटियर्स मर्द हैं और 142 वालिंटियर्स औरतें हैं जबकि 79(उनासी) काम करने वाले जो हैं वे (Paid) काम करने वाले हैं। 27 मई 2020 ई को इस में मज़ीद वुसअत पैदा की गई है और एम टी ए नए दौर में दाख़िल हुआ है। इसके पिछले पाँच चैनलों के स्थान पर अब दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों की दृष्टि से आठ चैनलों का आरम्भ किया गया है जिन पर अब चौबीस घंटे निरन्तर प्रसारण हैं।

एम टी ए 2014 ई से प्रोग्रामों की subtitling के द्वारा अनुवाद प्रसारित कर रहा है। इस साल इन अनुवाद की संख्या बढ़ा कर 10 कर दी गई है। उनमें अंग्रेज़ी, उर्दू, अरबी, फ्रांसीसी, जर्मन, हिस्पानवी, फ़ारसी, इंडोनेशियन, जापानी और पोलिश भाषाएं शामिल हैं।

एम टी ए सोशल मीडिया ऑनलाइन की सर्विसिज़ को भी बढ़ाया गया है। एम टी ए ऑनलाइन सर्विसिज़ मई 2020 ई से एम टी ए के छ: चैनलों की स्ट्रीमिंग (streaming)की जा रही है जबकि पिछले साल यह संख्या पाँच थी। इस समय और अधिक दो चैनलों को स्ट्रीम (stream) करने के सिल्सिले में काम हो रहा है और शीघ्र ही समस्त आठ चैनल स्ट्रीम के द्वारा वेबसाइट और अन्य सोशल मीडिया प्लेटफ़ार्मज़ पर उपलब्ध हो जाऐंगे।

सेंट्रल अफ्रीक़ा के मुबल्लिग़ सिलसिला लिखते हैं कि एक व्यक्ति काफ़ी अर्से से एम टी ए पर मेरा ख़ुत्बा जुम्अ: सुना करता था जो यहां से प्रसारित होता था और दूसरे अरबी प्रोग्राम और फ्रेंच प्रोग्राम भी सुनता था। कहते हैं हमने अपने मुअल्लिम महमूद अहमद साहिब को इस क्षेत्र में तब्लीग़ के लिए भिजवाया। जब उन्होंने वहां तब्लीग़ की और जमाअत का परिचिय करवाया तो वो व्यक्ति उठकर कहने लगा कि मैं आप लोगों का टीवी चैनल देखता हूँ जहां आपके ख़लीफ़ा का ख़ुत्बा भी सुनता हूँ। मैं तो काफ़ी समय से जमाअत को जानता हूँ। आज आपने और अधिक विस्तार से बता दिया इसलिए हमारी तसल्ली है और आप हमारी बैअत लें हम जमाअत के साथ हैं।

अमीर साहिब फ्रांस लिखते हैं कि एक औरत फराहती (Frahati) साहिबा अपनी बैअत की घटना बयान करती हैं। कहती हैं मेरा सम्बन्ध कोमरोस आईलैंड (Comoros Island) से है और मैं पैरिस में निवासी हूँ। जन्मजात मुसलमान हूँ। मैंने बचपन से ही इस्लामी शिक्षा प्राप्त की हुई है। मैं विभिन्न उल्मा से आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत के बारे में सवाल करती रही लेकिन मुझे उनकी तरफ़ से जो जवाब मिलते थे उनसे मेरी तसल्ली नहीं होती थी। एक दिन मेरी एक अहमदी दोस्त से बात हुई तो इस दोस्त ने मुझे अहमदियत अर्थात वास्तविक इस्लाम का परिचय करवाया और एम टी ए फ्रांस के चैनल से भी मुझे परिचित करवाया और विभिन्न किताबों का अध्ययन करने को कहा जिनमें से एक "दस शरायते बैअत" भी थी। कहती हैं इस पर मैंने तहक़ीक़ शुरू कर दी कि अहमदियों और ग़ैर अहमदियों में क्या अन्तर है। मैंने यूट्यूब और एम टी ए चैनल पर प्रोग्रामों को देखना शुरू कर दिया और कई माह तक इन प्रोग्रामों को देखती रही। इन प्रोग्रामों को सुनने और किताबों को पढ़ने के नतीजे में मेरे इल्म में बहुत वृद्धि हुई और मैंने महसूस किया कि जमाअत अहमदिया की शिक्षाएं बहुत सादा और हिक्मत के क़रीब हैं और रुहानी तौर पर भी मैंने अच्छा महसूस किया और इस तरह मेरे सवालों के उत्तर भी मुझे मिलते गए और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मैं ने सम्पर्क करने के बाद फ़ैसला कर लिया है कि अब बैअत कर के जमाअत में शामिल हो जाऊँगी।

नौ मुबाईन से सम्पर्क और बहाली की रिपोर्ट निम्नलिखित है। नाईजीरिया ने इस साल 52 हज़ार से अधिक नौमुबाईन से सम्पर्क बहाल किया। यह कुछ समय से सम्पर्क नहीं था। बेनिन नंबर दो पर है 11 हज़ार से अधिक हैं, एवरी कोस्ट नम्बर तीन पर 9 हज़ार से अधिक, कैमरून 7 हज़ार से अधिक, सेनेगाल 5 हज़ार से अधिक, बोरकीना फासो 4 हज़ार से अधिक, कोंगो किंशासा और इस तरह इनके इलावा भारत है, इंडोनेशिया है, बंग्ला देश है, अमरीका है ,गोइटे माला है, फिजी है, हर जगह विभिन्न देशों में हैं जहां समपर्क हुए।

इस वर्ष 80 देशों में कुल एक लाख 8 हज़ार 18 नौमुबाईन से समपर्क स्थापित हुए। नौमुबाईन के लिए रीफ़रेशर कोर्सों का भी आयोजन किया गया। 80 देशों से प्राप्त रिपोर्ट के अनुसार इस वर्ष नौमुबाईन के लिए 3 हज़ार 891 जमाअतों में 16 हज़ार 823 तर्बीयती कक्षाओं का आयोजन हुआ जिनमें नौमुबाईन की संख्या एक लाख 2 हज़ार 169 थी जो शामिल हुए और उन कक्षाओं में एक हज़ार 124 इमामों को भी ट्रेनिंग दी गई।

इस साल होने वाली बैअतें हालात ख़राब जो चल रहे थे, समपर्क नहीं हो सकते थे, बाहर निकल नहीं सकते थे, न दाईयाने इलल्लाह, न मुबल्लग़ीन,मुअल्लेमीन लेकिन फिर भी मेरा तो ख़्याल था कि कुछ हज़ार बैअतें होंगी लेकिन अल्लाह तआला के फ़ज़ल से एक लाख 12 हज़ार 179 बैअतें हुई हैं और 98 देशों से लगभग 220 क़ौमें अहमदियत में दाख़िल हुई हैं। इस साल नाईजीरिया की बैअतों की कुल संख्या 25 हज़ार 176है। कैमरून में इस साल 13191 बैअतें हुईं, सेरालियून 13723 एवरीकोस्ट 10538 माली 10,027 सेनेगाल 5790 कोंगो किंशासा में 4042 तंज़ानिया 3875 गिनी बसाऊ 3 हज़ार से ऊपर, कोंगो बराज़ा वैल में भी 4 हज़ार से ऊपर, लाइबेरिया लगभग 2 हज़ार, गिनी कनाकरी 1500 नाईजर, यह भी एक हज़ार 5 सौ के लगभग, बेनिन एक हज़ार से ऊपर, घाना एक हज़ार से ऊपर, मलावी एक हज़ार से ऊपर, चाड में 936 टोगो, योगंडा, सेंट्रल अफ्रीकन रीपब्लिक में जो बैअतों की संख्या है वह 800 से 1000 तक, मेडाग़ासकर में भी अच्छी संख्या हुई है। जो पहले यहां बैअतें होने की रफ़्तार थी उसकी दृष्टि से अच्छी रफ़्तार है। कीनिया में, साओ तोमे में, बरोंडी में, मोरीतानीया में, ज़ेम्बिया में, सोमालिया में, रवांडा में, एथोपिया में भी बैअतें हुईं।

इसी तरह हिन्दुस्तान में इस साल बैअतों की संख्या एक हज़ार 724 है। इंडोनेशिया में भी एक हज़ार से ऊपर हैं। बंग्ला देश, मलेशिया, जर्मनी में इस साल 104 बैअतें हुई हैं। इसके बाद यूके में 100 बैअतें हैं, फिर अमरीका की यूके से अधिक 101 बैअतें हैं, कैनेडा की जो बैअतें प्राप्त हुईं वह उनकी दृष्टि से तो 68 कम हैं लेकिन बहरहाल और भी काफ़ी काम उन्होंने किया है लेकिन बैअतों की तरफ़ भी ध्यान देना चाहिए। इस साल हंडूरस में अल्लाह के फ़ज़ल से 36 और हेटी में 32 और मैक्सिको में 23 बैअतें हुईं। ट्रीनेडाड में भी इस साल लगभग 20 के क़रीब बैअतें हुईं। फिजी में, माईक्रोनेश्या, मार्शल आईलैंड, पैरागोय, अर्जनटाइन, गयाना में 10 से 15, 20 बैअतें हुई हैं तो अल्लाह तआला के फ़ज़ल से काफ़ी स्थानों पर बैअतों का काम हुआ है। जहां-जहां भी जो भी अवसर मिलता रहा दाईयान को या मुबल्लग़ीन को समपर्क करते रहे।

लोगों से समपर्क करने से यह भी पता लग रहा है कि लोग एम टी ए के माध्यम से या किसी और माध्यम से जमाअत का परिचय प्राप्त करते रहे लेकिन हमारे लोगों के वहां समपर्क नहीं हैं इसलिए बैअतें नहीं हो सकीं लेकिन बहरहाल अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़रमाए जिनको भी अल्लाह तआला ने इस साल जमाअत में दाख़िल होने की तौफ़ीक़ दी अल्लाह तआला उन्हें दृढ़ता भी अता फ़रमाए। असल चीज़ तो

यह है कि ईमान और ईक़ान में तरक़्क़ी हो।

अमीर साहिब घाना लिखते हैं कि एक वहां के अल-हसन साहिब हैं उन्होंने बैअत की, अपने क़बीला के सरदार हैं। उन्होंने फ़ैमली सहित अहमदियत स्वीकार किया था लेकिन कुछ समय बाद उनका बड़ा बेटा इस्लाम से दूर हो गया और ईसाई हो गया वह फिर हमारे पास आए और उन्होंने कहा कि आप लोग ईसाइयों से बेहस कर सकते हैं। आप लोगों के पास तर्क हैं इसलिए मेरे बेटे से बात करें उसे समझाएँ और इस्लाम की तरफ़ वापस लाएं। अत: जब हम उनके बेटे से मिले तो उसने कुछ प्रश्न किए जिनके तसल्ली वाले उत्तर दिए गए और वह दोबारा अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अहमदियत में दाख़िल हो गया और यह पूरा ख़ानदान जो आठ लोगों का था जो पीछे हट गए थे दोबारा अहमदियत में शामिल हुए।

गिनी बसाऊ के मुबल्लिग़ इंचार्ज लिखते हैं कि तब्लीग़ी प्रोग्राम के दौरान, ये सारे प्रोग्राम जो हैं फरवरी मार्च से पहले के हैं। एक दूर के इलाक़े के एक गाव सिंचा मवादव (Sincha Mawadu) में अल्लाह तआला ने चार बैअतें प्रदान फ़रमाईं और वहां के एक प्रभुत्व वाले व्यक्ति हैं अब्दुल्लाह साहिब जब उन्होंने देखा कि चार लोग अहमदियत में दाख़िल हो गए हैं तो कहने लगे कि में इस साल हज पर जा रहा हूँ और हज से वापस आकर फ़ैसला करूँगा कि क्या मैं अहमदी होना चाहता हूँ कि नहीं तो उसके कुछ दिन बाद ही यह दोस्त हज पर चले गए। हज से वापस आए तो उन्होंने अपने आप जमाअत से सम्पर्क किया और कहा कि हज के दौरान ही अल्लाह तआला ने मेरे दिल में यह बात बिठा दी थी कि अहमदियत एक सच्ची जमाअत है और पूरे हज के दौरान अल्लाह तआला ने मेरे दिल में यह सन्तोष पैदा किया कि अहमदियत के साथ जुड़े रहने में ही निजात है और मैं हज के दौरान ही अहमदियत की सफलता के लिए दुआएं करता रहा। अत: हज से वापस आ कर उन्होंने अहमदियत स्वीकार की, बैअत की और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अब बेहतरीन दाई इलल्लाह भी हैं और अपने चंदे में भी बड़े हैं।

फ्रांस के अमीर साहिब लिखते हैं एक फ्रैंच दोस्त सरज स्टील (Serge Stehle) जिनका सम्बन्ध ईसाई मज़हब से था हर हफ़्ते चर्च में भी जाते थे और पादरी से अपने मज़हब पर और खासतौर पर ईसा अलैहिस्सलाम की हस्ती पर बहुत से सवाल करते थे। पादरी ने जवाब देने की बजाय उन्हें यह कहा कि आपको इस तरह के सवाल नहीं करने चाहिऐं। तब उन्होंने अपनी पत्नी (जो मुसलमान हैं)की मदद से इस्लाम में दिलचस्पी लेना शुरू कर दी। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में उनको जो मालूमात मिलीं वह यही थीं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आसमान पर गए हैं, इस्लाम का लिट्रेचर जो मुसलमानों का है इस में भी यही उनको मिला लेकिन वह इस बात पर तत्पर नहीं हुए थे, यह नहीं हो सकता और मानते भी नहीं थे कि कोई इन्सान आसमान पर जा सकता है। अत: उन्होंने इस बारे में दोबारा तलाश शुरू कर दी। कहीं से उनको हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताब "मसीह हिन्दुस्तान में" मिल गई और साथ ही जमाअत की वेबसाइट भी मिल गई। फिर जैसे जैसे उन्होंने अध्ययन किया वह कहते हैं मेरे समस्त सवालों के उत्तर मुझे मिलने शुरू हो गए और लॉक डाउन के दौरान जमाअत के प्रोग्राम देखते रहे। अन्त में उन्होंने बैअत करने का फ़ैसला किया और जमाअत अहमदिया में शामिल हो गए।

मरवान सरवर गुल मुरब्बी सिलसिला अर्जनटाइन लिखते हैं कि अर्जनटाइन की एक स्थानीय औरत गुबरैला ब्रैवो (Gabriela Bravo) साहिबा हमारे मिशन के सामने से गुज़रीं तो कहती हैं कि जब मिशन हाऊस के बाहर खिड़की में से मैंने देखा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तस्वीर अन्दर दीवार पर लगी हुई है और इसके साथ यह वाक्य भी लिखा हुआ था कि मसीह का आना हो चुका है तो इस बात का उन पर गहरा प्रभाव हुआ क्योंकि यह प्रैक्टाईजिंग (practicing) कैथोलिक थीं। इस से पहले उनको न इस्लाम में दिलचस्पी थी और न किसी मुसलमान को जानती थीं। अत: महोदया ने इस्लाम के बारे में और अधिक इल्म प्राप्त करना शुरू किया और फिर वहां की जमाअत से, मुरब्बी इंचार्ज से सम्पर्क किया और इस्लाम के बारे में जो कक्षाएं वहां आयोजित होती हैं उनमें आना शुरू हो गईं। उनके पति को उनका यह काम पसन्द नहीं आया लेकिन उन्होंने अपने पति से छुप-छुप के सम्पर्क भी रखा और अध्ययन भी करती रहीं। एक साल के बाद उन्होंने 28 दिसम्बर 2019 ई को अहमदियत स्वीकार करने का फ़ैसला किया। इस दौरान किसी कारण से उन मियां बीवी की अलैहदगी भी हो गई। और कारण भी थे लेकिन एक बड़ा कारण यह भी था जो उनकी लड़ाई का कारण बन रहा था लेकिन अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अब छ: माह से अधिक हो गए हैं और अपनी फ़ैमली के विरोध के बावजूद बड़ी दृढ़ता से और दिल की गहराई के साथ यह अहमदियत पर क़ायम हैं।

ख़्वाबों के माध्यम से अहमदियत स्वीकार करना: अल्लाह तआला इस तरह भी लोगों का मार्ग दर्शन करता है।

किर्गीज़स्तान के एक स्थानीय नौ मुबाइअ कादिरव शौकत (KADIROV SHOKAT) साहिब कहते हैं कि एक स्थानीय अहमदी आशिर अली के द्वारा मुझे जमाअत का इल्म हुआ। उन्होंने मुझे दुआ की नसीहत की। मैंने उसी दिन रात को घर आकर दो रकअत नमाज़ अदा की और अल्लाह तआला से हक़ को जानने के लिए तौफ़ीक़ मांगी। सईद थे, नेक फ़ित्रत थे, बड़ी तड़प के साथ दुआ की। कहते हैं इसी रात मैंने ख़्वाब में हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा कि आप समुन्द्र के पानी के ऊपर इबादत कर रहे हैं। ख़्वाब ने मेरे दिल में एक अजीब सा नूर पैदा कर दिया जिसके नतीजा में मुझे विश्वास हो गया कि अब मुझे हक़ का रास्ता मिल गया है फिर मैंने बैअत कर ली।

कैमरून से मुअल्लिम साहिब लिखते हैं कि नॉर्थ क्षेत्रों के दौरे के दौरान यहां के गांव "पेटू आओ" (Pitoir) में एक धर्म के आलिम से मुलाक़ात हुई। उन्हें जमाअत का परिचय करवाया गया। उनके सवालों के जवाब दिए गए। जमाअत का लिट्रेचर भी दिया गया। जाते हुए यह कहने लगे कि मेरे इल्म में था कि इमाम महदी आने वाले हैं लेकिन यह पहली बार सुना है कि इमाम महदी आ चुके हैं। मैं दुआ करूँगा कि अल्लाह तआला मुझे सीधे रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करे। वह बयान करते हैं कि इसके बाद वह अपने सेन्टर वापस आ गए। एक हफ़्ते के बाद जमाअत के सदर ने फ़ोन पर कहा कि आप गांव आ जाएं एक अच्छी ख़बर है। कहते हैं जब मैं गांव पहुंचा तो वही धर्म के आलिम आए हुए थे। मुझसे गले मिल कर रोने लग गए। उन्होंने बताया कि मैंने जमाअत अहमदिया के पमफ़्लेटस का अध्ययन किया है, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तस्वीर देखी है,फिर रोज़ दुआ करता रहा कि अगर यह व्यक्ति तेरी तरफ़ से है तो मेरी रहनुमाई फ़र्मा मैं तो कब से इमाम महदी की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। फिर कुछ दिन पहले हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम मेरी ख़्वाब में तशरीफ़ लाए और मुझे फ़रमाया कि उठो नमाज़ पढ़ो। इस पर मैं ख़्वाब में ही सोचता हूँ कि यह व्यक्ति सच्चा है और ख़ुदा की तरफ़ से है अत: इस ख़्वाब के बाद में सन्तुष्ट हो गया। अब मैं अपने बच्चों समेत जो पंद्रह लोगों थे बैअत कर के जमाअत में शामिल होता हूँ।

नसीर शाहिद साहिब फ्रांस से लिखते हैं कि एक औरत सुलेमा तो बालदे साहिबा कहती हैं इस साल रमज़ान से पहले ये ख़्वाब देखा कि मैं एक बहुत बड़ी मस्जिद में हूँ वहां बहुत से ग्रुप हैं जो क़ुरआन लिए बैठे हैं और यह विभिन्न ग्रुपस बटे हुए हैं और मैं उन्हें नहीं जानती। इसके विपरीत एक छोटा सा ग्रुप है इन मैं से एक औरत "कारा" को मैं जानती हूँ। अत: मैं इन समस्त ग्रुपों को छोड़कर इस छोटे ग्रुप में चली जाती हूँ जिसमें कारा बैठी थी। मस्जिद में मौजूद एक आदमी ने मुझे कहा कि तुम कुफ़्फ़ार के ग्रुप में क्यों जाना चाहती हो? इस पर मैंने उस आदमी से कहा कि तुम मुझे इस ग्रुप में जाने से क्यों रोक रहे हो। इस ग्रुप में एक औरत है जिसे मैं जानती हूँ और मैं इसी ग्रुप में जाना चाहती हूँ। कहती हैं उस वक़्त मैंने एक बड़ी ताक़तवर रोशनी देखी जिससे मेरी आँखें चुंधया गईं और मैं अपनी आँखें खोल नहीं सकी। फिर मैं ने अपने आपको कारा के ग्रुप में देखा और उसने मुझे अपने पास जगह दी। इसके बाद मेरी आँख खुल गई। कहती हैं कि मैं कारा को (जो उन की सहेली थी या सहेली नहीं थी परिचय ही था) काम के सिलसिले में दो तीन बार मिल चुकी थी लेकिन अहमदियत के हवाले से कभी इस से कोई विशेष गुफ़्तगु नहीं हुई थी। ख़्वाब के बाद मैंने शब्द "कुफ़्फ़ार" जिसे मैंने ख़्वाब में सुना था के बारे में मालूमात प्राप्त करनी शुरू कीं लेकिन कोई वज़ाहत न मिल सकी। फिर मैंने कारा से पूछा, सम्पर्क किया, अपना ख़्वाब सुनाया। इस पर कारा ने मुझे बताया कि "कुफ़्फ़ार" का शब्द काफ़िर से है और अन्य मुसलमान अहमदियों को काफ़िर कहते हैं इस पर में बहुत हैरान हुई, मुझे धचका लगा कि अहमदियों को क्यों काफ़िर कहा जाता है। अत: मैंने फ़ैसला किया कि बिना किसी देरी के अहमदियत स्वीकार कर लेनी चाहिए क्योंकि अब तो अल्लाह तआला ने ख़्वाब में ही मेरी रहनुमाई कर दी है और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अपने पाँच बच्चों समेत मई में बैअत कर के जमाअत में शामिल हो गई।

अमीर साहिब नाईजर बयान करते हैं कि वहां बैअत करने वाले एक अहमदी गांव "हाद्दा" के इमाम अब्दुल्लाह साहिब ने जलसा सालाना नाईजर के अवसर पर अपने एक ख़्वाब का वर्णन करते हुए बताया। एक अहमदी हैं उन्होंने अपने ख़्वाब का वर्णन किया कि जमाअत अहमदिया में दाख़िल होने से पहले उन्होंने देखा कि

जैसे वो अपने घर के आँगन में लेटे हुए हैं, रात का वक़्त है और चांद निकला हुआ है और इस चांद पर कलिमा तय्यबा लिखा हुआ है। इसी समय में ख़्वाब में वह देखते हैं कि इसी तरह की तहरीर और रंग में वह कलिमा उनके सेहन की दीवार पर भी लिखा हुआ है और इसके बाद उनकी आँख खुल जाती है। कहते हैं इस ख़्वाब के कुछ दिनों के बाद ही जमाअत के मुबल्लिग़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पैग़ाम लेकर आए। मेरे दिल में इस पैग़ाम को स्वीकार करने की तहरीक पैदा हुई। मैंने अपने गांव के साथ अहमदियत में शमूलीयत धारण कर ली। लेकिन आज जलसा सालाना में शामिल होकर मेरे दिल को सन्तोष प्राप्त हुआ क्योंकि इस ख़्वाब में कलिमा तय्यबा की तर्ज़ तहरीर और जो रंग मैंने ख़्वाब में देखा था यही जलसा के स्टेज पर ठीक उसी तरीका पर लिखा हुआ था और यह देख के मुझे यक़ीन हो गया कि मेरी ख़्वाब अल्लाह के फ़ज़ल से सच्ची थी।

फ्रांस में रहने वाले मराक़श के एक दोस्त अहमद हजानी (Ahmed Hajjani) साहिब अपनी कुबुलियत की घटना लिखते हैं कि एक शॉपिंग सेंटर में कुछ ख़रीदने के लिए गया लेकिन जो चीज़ मुझे चाहिए थी वह कहीं नहीं मिल रही थी। वहां एक आदमी से पूछा तो उसने मेरी रहनुमाई की और कहने लगा क्या आप अरबी जानते हैं? मेरे पास एक अरबी की किताब है जो इमाम महदी के बारे में है आप लेना पसंद करेंगे? मैंने वह किताब ले ली और उसे घर जा कर पढ़ लिया। मेरा दिल यह सब मानने को तैयार न हुआ लेकिन कुछ समय बाद कहते हैं अपने घर वालों से मिलने के लिए मराक़श गया, मराक़श के रहने वाले थे। वहां इस किताब का वर्णन किया तो दोस्त कहने लगे कि यह तो जमाअत अहमदिया की किताब है हम तो पहले ही अहमदी हो चुके हैं। दोस्तों ने मश्वरा दिया कि जब फ्रांस वापस जाओ तो वहां की जमाअत अहमदिया से सम्पर्क करना। कहते हैं बहरहाल इस दौरान मेरे पिता की फ्रांस में वफ़ात हो गई। मुझे शीघ्र घर पर वापस आना पड़ा और सदमे और हालात के कारण से भूल गया। मेरा दुआ की तरफ़ ध्यान पैदा हुआ। एक रात में ने ख़्वाब में देखा कि ख़लीफ़तुल मसीह एक सोफ़े पर बैठे हुए हैं और कुछ कह रहे हैं लेकिन मैं ख़लीफ़तुल मसीह के सामने कुछ नहीं बोल पाया। इसी दौरान दरवाज़े पर दस्तक होती है। मैंने दरवाज़ा खोला तो देखा कि मेरे मरहूम पिता खड़े हैं, उन्हें मैंने अंदर आने के लिए कहा तो कहने लगा कि मैं अंदर नहीं आ सकता लेकिन सुनो यह व्यक्ति अंदर जो सोफ़े पर बैठा है यह अल्लाह का सही पैग़ाम देने वाला है। तुम्हें इसके पीछे चलना होगा। कहते हैं कि मैं ख़्वाब में ही अपने पिता से कहता हूँ कि मैं तो उनको नहीं जानता। इस पर पिता जी ने जवाब दिया कि उनकी एक जमाअत है जो अब समस्त दुनिया में फैल चुकी है। तुम उनके साथ चलो और उनकी बैअत करो। इस तरह कहते हैं अल्लाह तआला ने मेरी रहनुमाई फ़रमाई और मैंने बैअत की।

अमीर साहिब इंडोनेशिया एक अहमदी की कुबुलियत की घटना लिखते हैं। कहते हैं कि इस बैअत करने वाले ने कहा कि मुझे यह बताया गया था कि जमाअत अहमदिया गुमराही में पड़ी है। मैं जमाअत अहमदिया में शामिल होने के स्थान पर एक ऐसी जमाअत में शामिल हो गया जो हुकूमत की मुख़ालिफ़त करने वाली थी। 1992 ई में जब इस जमाअत का अमीर पकड़ा गया तो मैंने उनके जांनशीन के हाथ पर बैअत करने से पहले इस्तेख़ारा किया तो ख़्वाब में मैं ने एक बुज़ुर्ग को देखा। इस बुज़ुर्ग ने कहा कि मैं इमाम महदी हूँ, तुम लोगों का इमाम हूँ। मैं मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद हूँ। इसके एक सप्ताह के बाद मुझे इस जमाअत के नए अमीर की बैअत करने पर मजबूर किया गया और कहा गया कि बैअत करो वर्ना क़त्ल कर दिए जाओगे। कहते हैं एक साल के बाद एक अहमदी से मुलाक़ात हुई। उसने तब्लीग़ की। मैंने उसे कहा कि अगर तुम्हारा इमाम एक नबी है तो ज़रूरी है कि उसकी कोई किताब इत्यादि भी होगी। इस पर अहमदी ने कहा कि वह मुझे एक किताब देगा। उसी रात एक-बार फिर ख़्वाब में मैं ने एक मस्जिद देखी जिस पर "अहमदिया" लिखा हुआ था। वहां एक इंडियन ड्रैस पहने आदमी खड़ा था जो मुझसे कहने लगा कि तुम इस में दाख़िल हो जाओ। तीन दिन के बाद अहमदी दोस्त किताब "इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी" देकर गया। जब मैंने किताब खोली तो शुरू में हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलाम की तस्वीर थी। उनका चेहरा देखकर याद आया कि यह तो बिल्कुल वही बुज़ुर्ग हैं जिन्हें पिछले साल मैंने ख़्वाब में देखा था अत: मैंने इस किताब को शुरू से अन्त तक पढ़ा और बैअत करके जमाअत में शामिल हो गया।

दिदगो, बोरकीना फासो के क्षेत्रों के मुअल्लिम लिखते हैं कि जमाअत के एक दोस्त जियालो हुसैनी साहिब जमाअत में दाख़िल होने की घटना बयान करते हैं कि बहुत अधिक विरोध था और यह बात किसी तरह लोगों को स्वीकार न थी कि उनके गांव में अहमदियत आए। अत: वे हर समय कोशिश में थे कि किसी तरह अहमदियत को गांव से ख़त्म कर दिया जाए। कहते हैं एक दिन मैंने ख़्वाब में देखा कि एक मैदान है जिसमें लोग दो गिरोहों में बटे हैं। एक तरफ़ अहमदियों का गिरोह सफ़ेद कपड़े पहने है और दूसरी तरफ़ हमारा ग्रुप जो विभिन्न रंगों के कपड़ों पहने हुए है। इतने में आवाज़ आती है कि दोनों ग्रुपस आपस में मुनाज़रा कर लें और जब मुनाज़रा शुरू होता है तो मैं देखता हूँ कि हमारे पास तो तर्क ही नहीं हैं अत: फ़ैसला अहमदियों के हक़ में होता है। तो जियालो हुसैनी साहिब कहते हैं कि अगले दिन सुबह अहमदिया जमाअत के पास गया और कहा कि मुझ पर स्पष्ट हो गया है कि अहमदियत सच्चा इस्लाम है इसलिए में जमाअत में शामिल होता हूँ।

अल्बानिया के मुबल्लिग़ इंचार्ज लिखते हैं कि जाफ़ीर साहिब ने बैअत की, 29 साल उनकी उम्र है। इकनॉमिक्स में उन्होंने मास्टर्ज़ किया हुआ है। जमाअत के बारे में उन्होंने पहले सुना तो इंटरनैट में मौजूद जमाअत के ख़िलाफ़ हर तरह का मवाद अध्ययन किया और शुरू से ही मस्जिद आते तो कई सवाल करते थे। कहते हैं हमारे नायब सदर साहिब, बुजार रामाज (Bujar Ramaj) साहिब ने उनसे तफ़सीली गुफ़्तगु की और तर्कों के साथ उनके सवालों के जवाब दिए। इस नौजवान से कहा कि वह हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों का ग़ौर से अध्ययन करे। अत: उन्होंने किताबें का अध्ययन शुरू कर दिया और धीरे-धीरे उन पर हक़ीक़त और वास्तविक इस्लाम स्पष्ट होना शुरू हो गया, उनके व्यवहार में तबदीली आनी शुरू हो गई। अब जब भी बात करते तो मिर्ज़ा साहिब कहने की बजाय मसीह Messiah का शब्द बोलते। बैअत करने को कहा गया, कहते हैं नहीं अभी मैंने और अधिक तहक़ीक़ करनी है। आख़िर उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताब "इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी" का अल्बानियन अनुवाद पढ़ा। उन्हें किताब इतनी अच्छी लगी कि दो बार उस का शुरू से अन्त तक अध्ययन किया। इसी दौरान उन्होंने ख़्वाब में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को देखा जिसमें हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने उन्हें ख़िलाफ़त से जुड़े रहने का पैग़ाम दिया। अत: उसके बाद उन्होंने बैअत कर ली। बैअत के बाद महोदय जमाअत की अल्बानियन वेबसाइट पर प्रसारित होने वाली हर पोस्ट का ध्यानपूर्वक अध्ययन करते हैं और हमेशा क़ुरआन मजीद की आयतों की जमाअत की तरफ़ से की जाने वाली तफ़सीर के अल्बानियन अनुवाद का बड़ी व्याकुलता से इंतज़ार करते हैं और इसी तरह ख़ुत्बों और ख़िताबों को नियमित सुनते हैं।

विरोधियों के प्रापेगंडे के नतीजे में बैअतें

तंज़ानिया से रवूओमा क्षेत्रों की एक जमाअत के मुअल्लिम वर्णन करते हैं कि हमारे गांव में वहाबी सम्प्रदाय से सम्बन्ध रखने वाले एक मौलवी ने पिछले साल जमाअत के ख़िलाफ़ नफ़रत और जोश दिलाने की मुहिम शुरू की और अपने ख़ुत्बों में जमाअत के ख़िलाफ़ और खासतौर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ज़ात के हवाले से गन्दी भाषा प्रयोग करता था। इसकी बात इतनी गंदी थी कि इस मस्जिद में जाने वाली कुछ ग़ैर अज़ जमाअत औरतों ने मस्जिद में जाना ही बंद कर दिया। इस विरोध के कारण से उन औरतों में से एक ने जमाअत के हवाले से तहक़ीक़ की और अहमदियत को वास्तविक और सच्चा जान कर बैअत कर ली। दूसरी तरफ़ इस मौलवी का अपमान और ज़िल्लत इस तरह हुई कि वह ग़ैर अख़लाक़ी हरकत में पकड़ा गया और इसको गांव वालों ने काफ़ी बुरा भला कहा कि तुमने हमें बदनाम कर दिया है। इस तरह कुछ और घटनाएं हैं।

फिजी के मुरब्बी साहिब लिखते हैं कि एक द्वीप रामबी है इसका दौरा करने की तौफ़ीक़ मिली। दौरे के दौरान जब हम लिट्रेचर बांट रहे थे तो दो यूरोपीयन ईसाई पादरी भी आ गए। उनके साथ एक लोकल ईसाई फ़ैमली भी थी। उनके साथ तब्लीग़ी बैठक शुरू हुई। कहते हैं मैंने बाइबल से तौहीद और आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई साबित की तो उन पादरियों से कोई बात नहीं बनी, वे जवाब न दे सके। दोनों पादरी अपनी लज्जा छिपाने के लिए व्यस्तता का बहाना कर के चले गए। उनके जाने के बाद ईसाई फ़ैमली के साथ जो बात हुई तो मालूम हुआ कि यह परिवार यद्यपि कि ईसाई थी लेकिन कुछ समय से विभिन्न फ़िर्क़ों के मसलों के कारण से बिल्कुल नास्तिक हो चुकी थी। अत: इस फ़ैमिली को इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं से आगाह किया गया और जमाअत के लिट्रेचर भी दिया गया। इस फ़ैमिली के साथ सवाल तथा जवाब की लम्बी बैठक हुई और अलहमदु लिल्लाह कि उन्होंने जमाअत का लिट्रेचर पढ़ने के बाद बैअत कर ली।

आचरण देखकर बैअत करने वाले: आचरण देखकर बैअत करने वाली

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 22 October 2020 Issue No.43

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Mobile : +91-94170-20616
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

घटना यह है कि कोंगो किंशासा के एक दोस्त दाऊद एल्विनगा साहिब को मिशन में कुछ काम करने को दिया गया। काम सम्पूर्ण होने पर जब उन्हें क़ीमत दी गई तो मुअल्लिम कहते हैं कि उन्होंने इस में से कुछ हिस्सा निकाल कर मुझे कमीशन के तौर पर दिया। मैंने लेने से इन्कार कर दिया और उन्हें समझाया कि नहीं ये तुम्हारा हक़ है में यह नहीं ले सकता। इस पर दाऊद ने कहा कि यह पहली बार हुआ है कि किसी को मैंने इस तरह कमीशन दिया हो और उसने लेने से इन्कार कर दिया हो। फिर तीन हफ़्ते के बाद आया और उसने कहा कि इस दौरान मैंने बहुत ग़ौर किया है जिस तरह आप लोग काम कर रहे हैं और जैसा आपका व्यवहार है आप ग़लत नहीं हो सकते इसलिए मैं बैअत करता हूँ और बैअत करने के बाद दाऊद में स्पष्ट तबदीली पैदा हुई है और बड़े सक्रिय मेम्बर हैं, चंदों में आगे हैं।

बिशकेक किर्गीज़स्तान से मुकाशोवा साहिबा (Mukashova) लिखती हैं कि मेरी उम्र 37 साल है। मैं शादीशुदा हूँ मेरे दो बच्चे हैं। अहमदियत के साथ मेरा परिचय नौ साल पहले हुआ जब मेरा पति अर्सलान बैअत कर के अहमदियत में दाख़िल हुआ था। हम एक साधारण सी फ़ैमिली थे। मैं ने उनकी बैअत पर कोई विरोध न किया और न ही कोई ख़ुशी का इज़हार किया। मैं जमाअत अहमदिया के बारे में जानती भी नहीं थी। अपने पति को देखती थी। वह हर जुम्अ: नमाज़ के लिए ज़रूर जाता था। इस में यह तबदीली देखकर कहती हैं मुझे ख़ौफ़ पैदा हुआ कि शायद वह अब मुझे पर्दा करने पर मजबूर करेगा। मज़हबी इंतिहापसंद बन जाएगा। लेकिन मैं ने महसूस किया कि इसके स्थान पर इस में बेहतरी की तब्दीली आ रही है। वह प्यार करने वाला और हमदर्द अधिक हो गया है। देख-भाल करने लग गया है और भरोसा और रुहानी दृष्टि से मज़बूत हो गया है। कहती हैं फिर माली संसाधनों की कारण से वह शिकागो अमरीका चला गया और मैं अपने छोटे बच्चों के साथ घर में रह गई। मैं ने बैअत नहीं की थी। अमरीका के वीज़ा के लिए पाँच बार डॉक्यूमिन्ट जमा किराए और हर बार इन्कार हो जाता था। इसके लिए मैं ने जापान का सफ़र भी किया। फ्रांस भी गई। मैक्सिको भी गई लेकिन कोई उम्मीद नहीं बनती थी। कहती हैं दैनिक हमारी लड़ाइयां भी शुरू हो गईं और फिर मैं सोचती थी क्यों अल्लाह तआला हमारी सहायता नहीं करता , मैं तो दुआ भी बहुत करती हूँ लेकिन बैअत नहीं की थी। तो कहती हैं एक दिन मेरे पति ने मुझे कहा कि जो अहमदियत से परिचित होते हैं और जानते हैं कि यही वास्तविक रास्ता है,सीधा रास्ता है लेकिन फिर बैअत नहीं करते तो अल्लाह तआला उनको सख़्त परीक्षाओं में डालता है। फिर कहती हैं इस पर मैंने अपनी समीक्षा की और अगले दिन मैंने बैअत कर ली और पांचों नमाज़ें नियमित पढ़नी शुरू कर दें और पहले पहले कभी नमाज़ें नहीं पढ़ती थीं अपने तौर पर दुआ करती थीं। क़ुरआन करीम पढ़ना शुरू कर दिया। नमाज़ तहज्जुद भी अदा करनी शुरू कर दी। बच्चों को भी नमाज़ पढ़ाना शुरू कर दी और कोशिश करती कि हर जुम्अ: पर भी हाज़िर हो जाऊं और फिर कहती हैं कुछ समय बाद अल्लाह तआला ने हमारी मदद की और अब अमरीका जाने की इजाज़त मिल गई है और अपने पति के व्यवहार और अल्लाह तआला के ये सुलूक देखकर मुझे यक़ीन हो गया कि जमाअत सच्ची जमाअत है

(शेष.....)

☆ ☆ ☆ ☆

..... पृष्ठ 1 का शेष

में लड़ाई शुरू हो गई एक कहता में इसकी परवरिश करूंगा दूसरा कहता मैं इसकी परवरिश करूंगा। आख़िर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास यह मामला पहुंचा तो आपने फ़रमाया कि बच्चा सामने करो और वह जिसको पसन्द करे उसके सपुर्द कर दो। परन्तु आज यह हालत है कि अगर कोई व्यक्ति मरने लगता है तो उसे अपनी ज़िन्दगी की आख़िरी घड़ियों में सबसे बड़ी चिन्ता और व्याकुलता यही होता है कि मेरे बाद मेरे बीवी बच्चों का क्या बनेगा। कौन उनकी परवरिश करेगा। कौन उनकी निगरानी करेगा कौन उनकी तरफ़ मुहब्बत और प्यार की निगाह से देखेगा। और जब वह व्यक्ति मर जाता है और उसके बच्चों की परवरिश का सवाल सामने आता है तो एक व्यक्ति कहता है मेरा दिल तो चाहता है कि बच्चा ले लूं परन्तु क्या करूँ मुझ पर बोझ बड़ा है। दूसरा कहता है इच्छा तो मेरी भी यही था परन्तु मुश्किले बहुत हैं। तीसरा कहता है में भी यह सवाब हासिल करना चाहता था परन्तु बहुत मजबूरी है। इस तरह एक एक कर के हर व्यक्ति इस बोझ से भागने की कोशिश करता है लेकिन सहाबा रज़ि में यह बात नहीं थी वे भागते नहीं थे बल्कि ख़ुशी से इस सवाब को प्राप्त करने की कोशिश करते थे। जब किसी क़ौम में यह भावना पैदा हो जाए कि वह अनाथों तथा दरिद्रों की ख़बर लेने लग जाए उनका सम्मान क़ौम के लोगों के दिलों में पैदा हो जाए। उनकी परवरिश में उन्हें सुकून और आनन्द प्राप्त हो और वे यतीमों को ऐसा ही समझें जैसे उनके अपने बच्चे हैं तो उस वक़्त ईमान के बिना भी वह क़ौम बहादुर बन जाती है। और जब उसके साथ किसी को मृत्यु के बाद जीवन पर ईमान भी हो और ज़िन्दा ख़ुदा पर भरोसा हो तो फिर तो ये दो चीज़ें मिलकर उसके दिल को ऐसा मज़बूत बना देती हैं कि मौत का डर उसके क़रीब भी नहीं आता। यूरोपियन क़ौमों में अगर हमें दिलेरी नज़र आती है तो उसका एक कारण यह भी है कि नौजवानों के अन्दर एहसास पाया जाता है कि यदि हम मर गए तो हमारी क़ौम अनाथों तथा विधवाओं का ध्यान रखेगी। यही कारण है कि मरने वाला मौत की ज़रा भी पर्वा नहीं करता वह जाता है और अपनी जान को क़ुर्बान कर देता है। ईमान और चीज़ है वे अधिकतर उन्हीं लोगों को हासिल होता है जिन्हें अल्लाह तआला के नबी पर ताज़ा-ताज़ा ईमान लाना नसीब हो। परन्तु क़ौमी कैरेक्टर की इस रंग में मज़बूती ईमान के बिना भी क़ौम के लोगों को बहादुर और निडर बना दिया करती है।"

(तफ़सीर कबीर, भाग 2 पृष्ठ 497 से 498 प्रकाशन क़ादियान 2010)

☆ ☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण के उदाहरण प्रस्तुत करो यहां तक कि सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad